ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

आषाढ़-सावन, संवत् नानकशाही ५४२
जुलाई 2010 वर्ष ३ अंक ११

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59
एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग **303** संपादन विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा ॥
आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का सतिगुरु पूरा ॥१॥
ठाकुरु गाईऐ आतम रंगि ॥
सरणी पावन नाम धिआवन सहजि समावन संगि ॥१॥रहाउ॥
जन के चरन वसहि मेरै हीअरै संगि पुनीता देही ॥
जन की धूरि देहु किरपा निधि नानक कै सुखु एही ॥२॥४॥३५॥ *(पन्ना ६७९-८०)*

धनासरी राग के इस पावन दुपदे अथवा शबद में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी अपना समस्त जीवन प्रभु-नाम चिंतन, मनन को समर्पित करके इसको सफल करने वाले गुरमुख का चित्रण करते हुए मनुष्य-मात्र को मनुष्य-जन्म का सुअवसर सफल करने का गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि हे भाई! जिसको परमात्मा के नाम का रंग लग गया है इस संसार में उसी मनुष्य को 'शूरवीर' कहना चाहिए। वह पावन नाम के साथ स्वयं को ओत-प्रोत कर अपने आप पर विजय प्राप्त कर लेता है अथवा काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार जैसे विकारों से बच जाता है। सभी उसके वश में हो जाते हैं जिसका मार्गदर्शक पूर्ण गुरु हो जाए। इसलिए हे भाई! आत्मिक प्रेम भावना के साथ उस मालिक अकाल पुरख का गुण गायन करो। उस परमात्मा की शरण में सदैव लगे रहने से, उसके नाम को स्मरण करने से आत्मिक अडोलता की मनोस्थिति प्राप्त होती है जो मनुष्य-जन्म का मूल उद्देश्य है। श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने योगियों और सिद्धों के साथ विचार-गोष्टि करते हुए उनको बताया कि संसार का परित्याग नहीं करना चाहिए बल्कि संसार में रहते हुए ही अत्यधिक इच्छाओं को वश में करते हुए सहज-भाव जीवन का आत्मिक आनंद का स्तर प्राप्त किया जा सकता है:

अंतरि सबदु निरंतरि मुद्रा हउमै ममता दूरि करी ॥
कामु क्रोधु अहंकारु निवारै गुर कै सबदि सु समझ परी ॥ *(पन्ना ९३९)*

नम्रता की मूरत सतिगुरु जी कथन करते हैं कि यदि मन को वश में करने वाले तेरे दासों के चरण मेरे हृदय में बस जाएं तो उनकी संगत में मेरा यह शरीर भी पवित्र हो जाए। हे कृपा के खजाने प्रभु! ऐसे गुरमुखों की ही चरण-धूल प्रदान करो। यही सबसे बड़ा सुख-आनंद है।

श्री अकाल तख्त साहिब की महानता तथा सदीवी प्रासंगिकता को समझने की आवश्यकता

छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सन् १६०६ ई. में रुहानी गुरगद्दी का कार्यभार संभालते ही श्री अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब की दर्शनी ड्योढ़ी के बिलकुल सामने श्री अकाल तख्त साहिब की रचना गुरु-घर के प्रीतवान बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी के हाथों करवाई। छठे पातशाह ने यहां सिंघासन लगाना प्रारंभ किया। सतिगुरु जी ने यहां से सिक्ख संगत के नाम प्रथम हुकमनामा जारी किया कि 'उस सिक्ख पर गुरु नानक पातशाह के घर की विशेष कृपा-दृष्टि होगी जो अच्छे घोड़े तथा शस्त्र भेटा हेतु लायेगा।' यह हुकमनामा गुरु नानक पातशाह की पावन बाणी तथा गुरमति सिद्धांत के पूर्णतः अनुकूल था, जिसमें सिक्ख को प्रेम का खेल खेलते हुए अपना शीश हथेली पर टिका कर आने का निमंत्रण दिया गया है और कहा गया है कि उस अकाल पुरख के बिना अन्य कोई राजा है ही नहीं और राज, माल, यौवन सभी ढलती छांव के समान हैं, सदीवी राज्य केवल उस अकाल पुरख का ही हो सकता है। सांसारिक राजा तो *चार दिवस के भूपति* होते हैं।

गुरबाणी दिशा-निर्देश बख्शिश करती है कि यदि राजा गुणों का धारक हो तथा वह प्रजा के कल्याण को सम्मुख रखता हुआ न्याय का राज्य स्थापित करने हेतु प्रयासरत् हो तो वह राजा स्वीकृत है, वह अकाल पुरख परमात्मा के दर-घर में प्रवान है। छठे पातशाह के गुरगद्दी काल के समय की राजनैतिक स्थिति अत्यंत नाजुक तथा चिंताजनक थी। समस्त राजा श्रेणी इस काल में गिरावट की गहरी खाई में गिरी हुई थी। गुण तथा न्याय का कोई नामो-निशान न था। अवगुण तथा अन्याय ही प्रधान था। समय की राजनैतिक गिरावट के ही परिणामस्वरूप श्री गुरु अरजन देव जी महाराज जैसी ऊंची तथा निर्मल प्रतिभा को घोर यातनाएं देकर लाहौर में शहीद कर दिया गया था। ऐसी परिस्थिति में गुरु नानक पातशाह के दर-घर द्वारा 'श्री अकाल तख्त साहिब' को साकार करना परम आवश्यक हो गया था। गुरु नानक पातशाह की कायम की गई निर्मल सिक्खी तथा दुखी एवं अधीर मानवता के हितों की रक्षा के लिए ऐसा करना जरूरी था।

श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना करते हुए छठे पातशाह ने दैवी गुरगद्दी पर विराजमान होते वक्त शाही शान-ओ-शौकत वाला पहनावा भी धारण किया और मीरी-पीरी की प्रतीक दो तलवारें दायीं तथा बायीं ओर एक साथ पहनीं। इससे सांसारिक और रूहानी जीवन के बीच समतोल रखने का मनोभाव परिलक्षित हो रहा था। जब श्री अकाल तख्त साहिब से सिक्खों को अच्छे घोड़े तथा शस्त्र लाने का हुकमनामा जारी किया गया तो गुरु के नाम-लेवा सिक्खों ने

इसको बढ़-चढ़कर व्यवहार में लाकर गुरु की खुशियां प्राप्त कीं। जिस जहांगीर ने शांति की साकार मूरत श्री गुरु अरजन देव जी को घोर यातनाएं देकर शहीद किया था उसका बौखलाहट में आना स्वाभाविक था। इस प्रकार श्री अकाल तख्त साहिब पर गुरु के सिक्खों द्वारा गुरु पातशाह की अगुआई में शारीरिक शक्ति और सैनिक शक्ति के विकास-विगास को देख-जांच कर वक्त की जालिम सरकार ने सिक्खों पर आक्रमणों का सिलसिला शुरू किया, जिनमें अकाल पुरख ने सत्यवादी सिक्ख फौज को ही फतह बख्शिश की। इस प्रकार श्री अकाल तख्त साहिब की सर्वोच्चता इसके साकार होने के प्रारंभिक काल में ही स्थापित हो गई और सिक्खों के हौंसले बढ़े तथा श्री अकाल तख्त साहिब में उनका विश्वास और अधिक दृढ़ हो गया, भले ही सरकार की साजिशी गतिविधियां इसको समाप्त करने के लिए चलती रहीं। गुरु पातशाह ने श्री अकाल तख्त साहिब को एक महत्वपूर्ण सिक्ख संस्था के रूप में साकार किया और इसकी क्रियाशीलता एवं उपयोगिता सदैव बनाये रखने के लिए इसके मुख्य सेवादार की भी व्यवस्था की। यह सम्मान भाई गुरदास जी जैसे स्वीकृत तथा सम्माननीय विद्वान को प्राप्त हुआ। भाई मनी सिंघ भी श्री अकाल तख्त साहिब के मुख्य सेवादार के रूप में सेवा निभाते रहे।

महाराजा रणजीत सिंघ के काल में श्री अकाल तख्त साहिब का बहुत महत्व था। महाराजा रणजीत सिंघ को भी कोई गलती आदि के कारण श्री अकाल तख्त साहिब पर तलब होकर तनखाह लगवानी पड़ी जबकि महाराजा रणजीत सिंघ उस समय राजनैतिक शक्ति के शिखर पर थे।

महाराजा रणजीत सिंघ के बाद आज तक के सिक्ख पंथ के इतिहास में कई सिक्ख अगुआ तथा अन्य सिक्ख शख्सियतें किसी न किसी गलती के कारण श्री अकाल तख्त साहिब पर तलब की जाती रहीं और उनमें से अधिकतर इसकी महानता को सिर झुकाकर दोष-मुक्त और सुरखरू ही नहीं होते रहे बल्कि पुन: लोकप्रियता के क्षितिज पर भी पहुंचते रहे। कुछ ऐसे सिक्ख भी हैं जो स्वयं तो इसकी महानता के आगे सिर न झुका सके परंतु कुछ पीढ़ियों के पश्चात उनकी औलाद ने इससे इंकारी होने का कलंक स्वयं हाजिर हो 'तनखाह' लगवा कर धोया।

आज फिर कुछ सिक्ख कहलवाने वाले व्यक्ति सिक्ख पंथ-विरोधियों के हाथों में खेलते हुए इसकी महानता से बागी हुए घूम-फिर रहे हैं। यदि वे अपनी भूल को स्वीकार करते हुए श्री अकाल तख्त साहिब पर स्वयं को पेश करते हैं, तनखाह लगवाते हैं तो इसमें उनकी अपनी भलाई है। समय की सरकारें तो सिक्ख पंथ को विभाजित कर उसकी शक्ति को कम करना चाहती ही हैं, मगर हम सिक्ख कहलवाने वालों को उनके बहकावे में आकर अपने प्रिय पंथ को पीठ नहीं दिखानी चाहिए तथा श्री अकाल तख्त साहिब को 'सुप्रीम' बनाए रखते हुए सदा इसके लिए समर्पित रहना होगा।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का संक्षिप्त जीवन परिचय

*-स. बिक्रमजीत सिंघ**

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म २१ आषाढ़ संवत् १६५२ तदनुसार जून १५९५ ई को जिला अमृतसर के गांव वडाली में हुआ। आपके पिता पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी थे। आपकी माता का नाम माता गंगा जी था। आपके जन्म के समय आपके पिता श्री गुरु अरजन देव जी माझा के इलाके में प्रचार हेतु गए हुए थे। जब उनको पुत्र के आगमन की खबर मिली तो उन्होंने वहां से हिदायत भेजी कि पुत्र की पूरी तरह से सुरक्षा की जाए, क्योंकि वे जानते थे कि उनका बड़ा भाई प्रिथी चंद इस बात से खुश था कि उनके (गुरु अरजन देव जी) यहां कोई औलाद नहीं है। उसे गुरगद्दी का लालच था, क्योंकि उनके पिता (चौथे गुरु) श्री गुरु रामदास जी ने गुणों के आधार पर गुरगद्दी छोटे बेटे श्री गुरु अरजन देव जी को प्रदान की थी। इसके चलते प्रिथी चंद ने इस बात का विरोध किया था। जब श्री गुरु अरजन देव जी के घर बेटा पैदा होने की खबर प्रिथी चंद ने सुनी तो उसको गुरगद्दी एक बार फिर हाथ से जाती हुई दिखी, जिसे वह अपने बेटे को दिलवाना चाहता था।

प्रिथी चंद की साजिशें

प्रिथी चंद ने श्री गुरु अरजन देव जी के घर पैदा हुए बाल हरिगोबिंद साहिब को मारने की साजिशें भी रचीं। उसने एक दाई को कुछ रुपयों का लालच देते हुए बाल हरिगोबिंद जी को जहर मिला कर दूध पिलाने को कहा जिसे उस दाई ने मान लिया।

दाई जब माता गंगा जी के पास पहुंची तो उसने माता जी के समक्ष विनती की कि उसे बाल हरिगोबिंद जी की संभाल के लिए रखा जाए, तो माता जी ने उसकी विनती स्वीकार करते हुए उसे इस काम के लिए रख लिया। जब उसने जहर मिला कर बाल हरिगोबिंद जी को दूध पिलाने की कोशिश की तो बाल हरिगोबिंद जी ने दूध न पिया। माता जी के जांच करने और दाई को पूछने तक दाई को खुद ही जहर चढ़ गया और वह वहीं पर ढेर हो गई।

दूसरी तरफ जब प्रिथी चंद को इस बात का पता चला तो उसने दूसरी तरकीब सोची। प्रिथी चंद ने बाल हरिगोबिंद साहिब को सांप से डसवाने का प्रयत्न किया लेकिन उन्होंने उलटा सांप को ही मार डाला। प्रिथी चंद ने बाल हरिगोबिंद जी को मारने के और भी कई यत्न किए लेकिन वह कामयाब न हो सका।

शिक्षा का प्रबंध

श्री गुरु अरजन देव जी ने बाल हरिगोबिंद साहिब और उनकी माता गंगा जी को अमृतसर बुला कर वहां पर उनका निवास करवा दिया। यहां पर बाल हरिगोबिंद जी को शिक्षा देने के लिए सभी जिम्मेदारी बाबा बुड्ढा जी को सौंप दी।

शिक्षा के अलावा बाल हरिगोबिंद जी ने घुड़सवारी, बंदूक चलाना, तलवार इत्यादि चलाना भी सीख लिया।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का मनमोहक रूप

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब शारीरिक रूप से

*S/o Ranjeet Singh, 2946/7, Bazar Loharan, Chowk Luxmansar, Sri Amritsar

बहुत सुंदर और मनमोहक थे। चूड़ामणि कवि भाई संतोख सिंघ अपनी एक रचना में कहते हैं : "उनके पांव कमल जैसे लाल, धबीले और नाखून हीरों की कतार जैसे, दोनों टांगें सुपारी के पौधे की तरह खूबसूरत थीं। उनकी छाती चौड़ी और कंधे ऊंचे थे। उनके दोनों हाथ कमल जैसे, चेहरा चांद जैसा और आंखें कमल की पंखुड़ियों जैसी थीं जो एक ही दृष्टि में संगत को निहाल कर देती थीं।"

ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब बुलंद लंबाई, अति सुंदर, शूरवीर, रूहानी-जिस्मानी दोनों बातों से बली, उदार और मीठे वचनों वाले थे।

गुरु जी की सगाई

जहांगीर बादशाह का दीवान चंदू मल अपनी बेटी की शादी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से करना चाहता था, जिसका प्रस्ताव उसने श्री गुरु अरजन देव जी के आगे रखा। इस बात को लेकर जब श्री गुरु अरजन देव जी ने सिक्ख संगत से बात की तो संगत ने रिश्ता अस्वीकार करने के लिए गुरु जी को कह दिया। गुरु जी ने संगत का हुक्म मान लिया। दीवान चंदू मल का यह प्रस्ताव कबूल न करने के कारण वह गुरु जी से वैर रखने लगा। इस बात से खफा चंदू ने जहांगीर बादशाह को गुरु जी के खिलाफ भड़काना शुरू कर दिया।

उधर श्री गुरु अरजन देव जी ने यह ऐलान किया कि उनको किसी साधारण तथा श्रद्धावान सिक्ख की कन्या चाहिए इसलिए संगत में से गुरु हरिगोबिंद साहिब की शादी गांव डल्ला निवासी नारायण दास की बेटी दमोदरी से हुई। इतिहासकारों के मुताबिक आपकी तीन शादियां हुई थीं। दूसरी शादी बकाला गांव निवासी हरी चंद की बेटी बीबी नानकी के साथ और तीसरी मंडिआली गांव के निवासी दया राम की सपुत्री महांदेवी के साथ हुई थी और बाद में आपके घर पांच बेटों ने जन्म लिया था, जिनके नाम--बाब गुरदित्ता जी, बाबा सूरज मल जी, बाबा अणी राय जी, बाबा अटल राय जी, बाबा तिआगमल जी थे और एक पुत्री बीबी वीरो थीं।

श्री गुरु अरजन देव द्वारा गुरगद्दी सौंपे जाना

मुगल बादशाह जहांगीर ने श्री गुरु अरजन देव जी को लाहौर बुलवाया। इसके कई तत्कालीन कारण थे, जिसमें एक कारण था श्री गुरु अजरन देव जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना और सिक्खी के प्रचार और प्रासार के लिए गुरु जी द्वारा किये कार्य। इसके अलावा दीवान चंदू और प्रिथी चंद ने जहांगीर को गुरु जी के खिलाफ काफी भड़काया था। गुरु जी ने जहांगीर के गलत इरादों को पहचान लिया था। वे जानते थे कि सिक्खी के ऊपर एक बड़ा हमला होने वाला है। श्री गुरु अरजन देव जी ने समय को मद्देनजर रखते हुए १६०६ ई को अपने ग्यारह वर्षीय सपुत्र को गुरगद्दी पर विराजमान किया और शस्त्रधारी होने का उपदेश दिया तथा खुद लाहौर के लिए रवाना हो गए जहां उन्हें जहांगीर ने शहीद करवा दिया।

मीरी-पीरी धारण करना

श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद गुरगद्दी की जिम्मेदारी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब पर आ गई। वे जानते थे कि समय की हकूमत को उसके द्वारा किये जा रहे अत्याचारों के जवाब में कोई नई रणनीति अपनानी पड़ेगी। यह वही रणनीति थी जो श्री गुरु अरजन देव जी ने लाहौर जाने से पहले बेटे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को अपनाने को कही थी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने गुरगद्दी की मर्यादा को बदलते हुए बाबा बुड्ढा जी के हाथों मीरी और पीरी की दो तलवारें पहनीं। मीरी

जहां सांसारिक विषयों से संबंध रखती थी वहीं पीरी आध्यात्मिकता का प्रतीक थी और शक्ति का सुमेल था। मीरी और पीरी का यह संकल्प सिक्ख धर्म का आदर्श बना। अब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने संगत को अच्छे शस्त्र और बढ़िया घोड़े गुरु-दरबार में लेकर आने का हुक्म किया। मीरी-पीरी का सिद्धांत श्री गुरु नानक देव जी की पूर्व निश्चित दिव्य दृष्टि का भिन्न अंग तथा स्वरूप था।

श्री अकाल तख़्त साहिब की स्थापना

इसके उपरांत श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने मुगल हकूमत के सभी चैलेंज कबूल करते हुए मुगल हकूमत के खिलाफ अपनी आजाद हस्ती और खुद फैसले लेने के अधिकारों को प्राप्त करने हेतु श्री अकाल तख़्त साहिब की स्थापना की। इसे शुरू में 'अकाल बुंगा' कहा जाता था। इसकी स्थापना में बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी ने भरपूर योगदान दिया। अब श्री अकाल तख़्त साहिब पर सिक्ख संगत के दरबार लगते तथा गुरु साहिब की रहनुमाई में सिक्खों को शारीरिक तौर से मजबूत करने के लिए रोजाना कुश्तियां करवाई जाने लगीं। वीर-रसी वारों के गायन हेतु ढाडी दरबार लगाए गए। इन सभी कार्यों का अपना एक अलग इतिहास है जिससे मुगलों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों को एक करारा जवाब दिया गया था।

चंदू द्वारा जहांगीर के पास शिकायत

दीवान चंदू मल ने जहांगीर के पास शिकयात कर दी कि श्री गुरु अरजन देव जी का सपुत्र और सिक्खों का छठम पीर (गुरु) हरिगोबिंद (साहिब) अपने पिता की शहीदी के बाद जंगी हथियार और सेना एकत्र कर रहा है। उसने एक 'तख़्त' भी बना लिया है। बादशाहों की तरह कचहरी लगाता है और सिक्खों को हुक्म करता है। वह अपने आप को सच्चा पातशाह कहलवाता है। अगर उसे काबू न किया गया तो वह किसी दिन मुगल बादशाह को खतरा बन सकता है। चंदू की इन बातों को सुन कर जहांगीर काफी चिंतातुर हो गया। जहांगीर ने अपने दो दरबारियों वजीर खां और किंचत बेग को गुरु जी को दिल्ली लाने को भेजा। जब वे अमृतसर पहुंचे तो गुरु जी के साथ तैयार-बर-तैयार सिक्ख भी दिल्ली रवाना हो गए।

जहांगीर से मेल

दिल्ली में जहांगीर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को मिलकर काफी प्रभावित हुआ, लेकिन चंदू आदिक विरोधियों ने गुरु जी के खिलाफ जहांगीर को भड़काया।

ग्वालियर के किले में कैद

चंदू की भड़काहट में जहांगीर ने गुरु जी को ग्वालियर के किले में नजरबंद करवा दिया।

साईं मियां मीर की भूमिका

श्री गुरु अरजन देव जी और साईं मियां मीर के संबंध मित्रतापूर्ण थे। उन्होंने श्री हरिमंदर साहिब की नींव रखी थी। जब ग्वालियर के किले में गुरु जी को कैद कर दिया तो इसकी सूचना लाहौर में साईं मियां मीर को मिली। उन्होंने बादशाह जहांगीर को गुरु जी को छोड़ने की बात की तो जहांगीर उनकी बात को न टाल सका और जहांगीर ने गुरु जी की रिहाई का हुक्म दे दिया।

बंदीछोड़ गुरु जी

जब किले में से गुरु जी को रिहा करने के लिए वजीर खान ग्वालियर पहुंचा तो किले में गुरु जी के साथ अलग-अलग राज्यों से लगभग ५२ राजपूत राजे भी कैद थे। गुरु जी ने उनको बादशाह के प्रति वफादार होने का भरोसा दिलाकर रिहा करवा दिया, जिससे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को 'बंदीछोड़ गुरु' भी कहा जाने लगा।

चंदू की मौत

साईं मियां मीर और वजीर खान से जहांगीर को पता चल चुका था कि चंदू श्री गुरु अरजन देव जी से शाही जुर्माना वसूल करने के बहाने अपनी बेटी का रिश्ता नामंजूर करने वाली बात का बदला लेना चाहता था जिस कारण उसने पांचवें गुरु को यातनाएं दिलवा कर शहीद करवा दिया था।

जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ग्वालियर के किले से बाहर आये तो जहांगीर ने चंदू को सजा दिलवाने के लिए गुरु जी के सपुर्द कर दिया। इसके उपरांत गुरु जी सीधे अमृतसर पहुंचे। सारी संगत में खुशी की लहर दौड़ गई। इसके बाद गुरु जी अमृतसर से जब लाहौर आये तो चंदू को कैद कर अपने साथ ले आए। लाहौर पहुंच कर चंदू दुख, भूख और शर्म का मारा दम तोड़ गया। बाद में चंदू के बेटे कर्म चंद ने भी गुरु जी के साथ ईर्ष्या रखी, परन्तु वह गुरु जी के साथ हुई श्री हरिगोबिंदपुर की जंग में मारा गया।

लाहौर में गुरु-स्थानों की सेवा

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने लाहौर पहुंच कर अपने पिता श्री गुरु अरजन देव जी के शहीदी-स्थान के दर्शन किये और वहां यादगार बनाने तथा उसकी सेवा के लिए भाई लंगाह को नियुक्त किया। जन्म-स्थान श्री गुरु रामदास जी, बाउली साहिब, डब्बी बाजार के दर्शन करके वहां की भी मुरम्मत करवाई।

अमृतसर वापसी

कुछ समय लाहौर में गुरु-स्थानों की सेवा करवाने के बाद आप अमृतसर वापस आ गए।

नानकमते जाना

अमृतसर निवास के समय आपको यह पता चला कि गुरु नानक साहिब से सम्बंधित स्थान नानकमते में कुछ योगियों ने कब्जा करके वहां पर बेअदबी की है तो आपने नानकमता (उत्तराखंड) जाने की तैयारी कर ली। यहां से चलने से पहले आपने अपना सारा जंगी समान और परिवार करतारपुर भेज दिया। पीलीभीत पहुंच कर वहां के सेवादर अलमस्त से सारा हाल पूछा और उस जगह जहां पीपल के पेड़ के नीचे गुरु नानक साहिब का स्थान था, को योगियों से मुक्त करवा उसे आबाद किया। इतिहासकारों के मुताबिक लगभग दो साल बाद गुरु जी अमृतसर वापिस पधारे।

गुरु जी के रोजाना के कार्य

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अमृतसर निवास के समय सुबह होने से पहले (अमृत वेले) पहर रात रहती स्नान करते और अंतर्ध्यान मुद्रा में समाधिलीन हो जाते। सूर्य उदय होने से दिन तक शबद-चौंकी दीवान लगाते। इसके बाद संगत गुरु जी के दर्शन करती। इसके बाद गुरु जी दोपहर को श्री अकाल तख्त साहिब के ऊपर दीवान लगाते। गुरु जी द्वारा संगत के सभी शंके दूर किये जाते। दूसरे या तीसरे दिन आप कई जवानों को साथ लेकर शिकार खेलने जाते और शस्त्र-विद्या का अभ्यास करवाते। संध्या के समय 'सो दरु रहरासि' के पाठ के उपरांत संगत के साथ चौंकी साहिब लेकर श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा करते और उसके बाद भोजन करके विश्राम करते।

कशमीर की यात्रा

अमृतसर निवास करने के बाद आप जी ने कशमीर की संगत को दर्शन देने का कार्यक्रम बनाया। यहां पर आप गलोटियां, वजीराबाद और मीरपुर होते हुए श्रीनगर पहुंचे, जहां पर आपका मेल माई भागभरी के साथ हुआ। यहां पर आपकी याद में एक गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। कशमीर से वापस पंजाब की तरफ रवाना होते हुए आप बारामूला के

रास्ते पंजा साहिब में श्री गुरु नानक देव जी से सम्बंधित स्थान के दर्शन करते हुए गुजरात शहर में शाहदोला को मिलकर वजीराबाद होकर हाफिजाबाद अपने एक सिक्ख कर्मचंद के पास आ गए। हाफिजाबाद से गांव भाई मट्टू होते हुए मंडिआली गांव आ गए। मंडिआली से आप जन्म-स्थान श्री ननकाणा साहिब (पाकिस्तान) से होते हुए गांव मदरा और गांव मांगा के रास्ते अमृतसर पहुंचे।

जहांगीर की मौत

उधर दूसरी तरफ जहांगीर की सन् १६२७ में मौत हो गई और उसके तख्त का वारिस उसका बड़ा बेटा शाहजहां बन गया।

शाहजहां से बाज का झगड़ा

अमृतसर वापस आकर गुरु जी ने फिर से शिकार पर जाना शुरू कर दिया। एक दिन गुरु जी गांव अटारी की तरफ शिकार खेलने गए हुए थे कि दूसरी तरफ लाहौर की तरफ से शाहजहां के शिकारी भी शिकार खेलने आए हुए थे। शाहजहां के शिकारियों ने किसी जानवर के पीछे सफेद बाज छोड़ा जो इधर गुरु जी के शिकारियों के पास आ गया। जब बादशाह के शिकारियों ने अपना बाज मांगा तो गुरु जी के शिकारियों ने बाज देने से इंकार कर दिया।

जब इस बात का बादशाह को पता चला तो उसने मुखलिस खान सेनापति को सात हजार की फौज देकर गुरु जी से बाज लेने भेजा। शाही सेना की चढ़ाई की खबर सुनकर गुरु जी ने आगे से टक्कर लेने के लिए तैयारी कर ली।

लोहगढ़ का किला

गुरु जी ने इस तरह के हमले को रोकने के लिए एक कच्ची गढ़ी (किला) तैयार करवाया हुआ था जिसमें गुरु साहिब ने लगभग पांच सौ सिक्ख नियुक्त किए हुए थे।

गुरु साहिब का (सिक्खों का) पहला युद्ध

सेनापति मुखलिस खान ने शाहजहां के हुक्म पर अमृतसर पर धावा बोल दिया। इन दिनों श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की बेटी बीबी वीरो की शादी थी। युद्ध के कारण गुरु जी ने सिक्खों के एक जत्थे के साथ रात को ही बीबी वीरो जी को गांव झबाल भेज दिया।

लोहगढ़ के किले से गुरु के महल और रामसर होते हुए युद्ध रात में ही गांव चब्बे पहुंच गया। यहां पर दोनों तरफ से डट कर मुकाबला हुआ। इस मुकाबले में गुरु जी द्वारा मुखलिस खान मारा गया और मुसलमानी फौज लाहौर भाग गई। सिक्खों ने यह पहला युद्ध जीत लिया। जिस जगह पर यह संग्राम हुआ उस जगह पर अब गुरुद्वारा संगराणा साहिब सुशोभित है।

बीबी वीरो की शादी

इसके बाद बीबी वीरो की शादी के लिए गुरु जी अगला दिन चढ़ने से पहले ही गांव झबाल पहुंच गए, जहां पर आप जी ने बीबी वीरो की शादी भाई सानू राम से की। इसके बाद गुरु जी परिवार सहित गोइंदवाल साहिब आ गए और परिवार को वहीं छोड़कर खुद योद्धाओं के साथ करतारपुर (जिला जलंधर) चले गए।

दूसरा युद्ध : श्री हरिगोबिंदपुर

लगभग एक महीना करतारपुर निवास कर गुरु जी बरसात का मौसम निकालने के लिए ब्यास दरिया के किनारे रुहेला गांव में अपने सैनिकों के साथ यहां आ टिके। भगवान दास घेरड़ जो इस इलाके का चौधरी था वह गुरु जी को यहां पर रहने नहीं देना चाहता था, जिस कारण वह गुरु जी से झगड़ पड़ा। इस लड़ाई में भगवान दास मारा गया। भगवान दास का बेटा रत्न चंद अपने बाप की मौत का बदला लेना चाहता था जिस कारण वह चंदू

के बेटे कर्म चंद को साथ लेकर जलंधर के सूबेदार अब्दुल्ला खान के पास फरियाद लेकर चला गया। अब्दुल्ला खान उनकी मदद के लिए दस हजार की फौज लेकर गुरु जी के साथ लड़ने के लिए आ गया। इस युद्ध में रत्न चंद, कर्म चंद, अब्दुल्ला खान और उसकी काफी सेना मारी गई। यहां पर भी गुरु जी की फतह हुई। गुरु जी की यह दूसरी जंग थी और दूसरी जीत। इसी जीत के बाद रुहेले गांव का नाम बदल कर श्री हरिगोबिंदपुर रख दिया गया।

बाबा बुड्ढा जी का अकाल चलाणा

कुछ दिनों के बाद गांव रमदास में संवत् १६८८ को बाबा बुड्ढा जी पंचतत्व में विलीन हो गए। बाबा जी का दाह संस्कार गुरु जी ने खुद अपने कर-कमलों से किया।

डरोली भाई को कूच

अमृतसर रहते हुए गुरु जी को यह मालूम पड़ा कि शाहजहां आप जी के बहुत ज्यादा विरोध में हो गया है, क्योंकि वह अपनी पहली दो हारों का बदला लेना चाहता है। इन बातों से गुरु जी शाही हमले को रोकने के लिए अमृतसर से परिवार और सामान के साथ अपने तीन हजार सैनिकों को साथ लेकर डरोली भाई चले गए। इसके बाद आपको अमृतसर आने का मौका नहीं मिला। यहां पर ही माता दमोदरी जी अकाल चलाणा कर गए। इसके बाद गुरु जी राय जोधे के पास गांव कांगड़ चले गये। यहां पर काबुल का एक सिक्ख आपके पास आया और उसने बताया कि वह गुरु जी के लिए कीमती घोड़े और कुछ सामान लेकर आया है पर रास्ते में सब कुछ सूबा-ए-लाहौर ने लूट कर शाहजहां को भेंट कर दिया है। इस बात पर गुरु जी ने लूटा हुआ सारा सामान वापस लेकर आने की जिम्मेदारी बाबा बिधी चंद को सौंपी। गुरु जी की आज्ञा मान कर बाबा बिधी चंद सारा सामान और घोड़े शाही किले में से निकाल आया।

तीसरा युद्ध

जब बाबा बिधी चंद द्वारा सामान वापस ले जाने की खबर शाहजहां को मिली तो शाहजहां ने अपने एक वफादार सिपाही लाल बेग को लगभग ३५ हजार की फौज देकर गुरु जी को पकड़ लाने का हुक्म किया। दूसरी तरफ गुरु जी के पास अपनी तीन हजार फौज और एक हजार राय जोध के पास थी। जब गुरु जी को हमले के बारे में पता चला तो गुरु जी ने कांगड़ गांव छोड़कर गांव नथाणे से तीन मील दूर जंगल में एक पानी की ढाब के चारों तरफ मोर्चे लगा कर सारी सेना वहां पर नियुक्त कर दी।

इसी बीच हो-हल्ला करता हुआ लल्ला बेग भी वहां पर पहुंच गया। लल्ला बेग ने पहुंचते ही हमला कर दिया। उसकी फौज सर्दी होने और थकावट हो जाने के कारण कुछ न कर सकी। इधर गुरु जी के सैनिकों के पास सभी प्रबंध संपूर्ण थे। लल्ला बेग की इतनी बड़ी फौज गुरु जी की फौज का कुछ न कर सकी। इतिहासकारों के मुताबिक लगभग १८ घंटे के युद्ध में लल्ला बेग, उसके दो सेनापति बेटे और बहुत सारी सेना मारी गई। यह जंग भी गुरु जी ने जीत ली। यह युद्ध 'जंग महराज' के नाम से प्रसिद्ध है। इसी जंग में गुरु जी का दिलबाग नामक घोड़ा भी मारा गया था। यहां पर गुरु जी ने अपने शहीद सिक्खों का अंतिम संस्कार भी किया। यहां पर गुरुद्वारा गुरुसर साहिब सुशोभित है, जो रामपुरा फूल के पास रेलवे स्टेशन से तीन मील दूर गांव महराज के पास है।

करतारपुर वापसी

युद्ध-भूमि से गुरु जी वापस कांगड़ आ

गए। कुछ दिन यहां विश्राम किया। जख्मी और शहीद सिक्ख सिपाहियों को इलाज और उनके वारिसों की यथायोग्य माली सहायता की और उसके बाद करतारपुर आ टिके। यहां पर आपके बेटे अणी राय का भी अकाल चलाणा हो गया।

श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब की शादी

करतारपुर पहुंच कर गुरु जी ने अपने छोटे सपुत्र श्री (गुरु) तेग बहादर जी की शादी करतारपुर निवासी लाल चंद की बेटी बीबी गुजरी के साथ कर दी।

पैंदे खान द्वारा गुरु जी का विरोध

पैंदे खान नाम का एक पठान गुरु-घर का काफी समय से सेवक था, जिसे गुरु जी ने अपनी अत्यंत बख्शिश द्वारा पाला-पोसा था। वह अपनी बीवी और जमाई के पीछे लगकर गुरु जी का विरोधी हो गया जिस कारण गुरु जी ने उसको मुंह न लगाया। पैंदे खान इस ईर्ष्या में आकर लाहौर के बादशाह के पास चला गया। शाहजहां पहले से ही गुरु जी के खिलाफ था। उसने काले खान को पचास हजार की फौज देकर पैंदे खान की मदद के लिए भेज दिया। काले खान के पास जलंधर के सूबे की दो हजार की फौज भी मिल गई और उन्होंने आधी रात के समय करतारपुर को घेर लिया।

चौथा युद्ध (करतारपुर का)

गुरु जी के पास केवल १८०० योद्धे थे जिनके साथ गुरु जी ने ५२ हजार तुर्कों की सेना के साथ युद्ध किया था। इस युद्ध में पैंदे खान, काले खान का दामाद और बहुत-सी तुर्क सेना मारी गई। यहां पर गुरु जी के लगभग ७०० सिक्ख सैनिक शहीद हो गये और गुरु जी का दूसरा घोड़ा गुलबाग भी मारा गया। यह युद्ध भी सिक्ख सैनिकों ने जीत लिया। इसके बाद गुरु जी करतारपुर से कीरतपुर के लिए रवाना हो गए। कीरतपुर में रहते समय आपका मिलाप पीर बुड्ढण शाह से हुआ।

सिक्खी का प्रचार

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपना निवास केन्द्र कीरतपुर ही पक्का कर लिया और गुरसिक्खी के प्रचार के लिए बाहर के इलाकों में प्रचारक भेज दिये। ये प्रचारक सिक्खी का प्रचार करते और संगत से दसवंध इकट्ठा करते थे तथा गुरु के लंगर के लिए भेजते। कीरतपुर में गुरु जी ने ८०० सैनिक और तोपची रखे हुए थे।

गुरु जी के आध्यात्मिक उपदेश

गुरु जी ने संगत को आत्मा-परमात्मा संबंधी उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि जो सब में मौजूद है, जो सदा एक-रस रहने वाला निर्विकार और अविनाशी सर्वनिरंतर परमात्मा है उसको पहचानो। गुरु जी का उपदेश है कि आत्मा का बुद्धि के साथ संबंध होता है और बुद्धि का मन के साथ, इसलिए अगर मन और इंद्रियों को मोड़ कर सुरति को अंदर टिकाए रखो तो जगत की चिंतायें मिट जाएंगी और परमात्मा के साथ मिल कर परम सुख प्राप्त होंगे।

श्री गुरु हरिराय साहिब को उपदेश और गुरगद्दी

फिर एक दिन सजे हुए दीवान में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने बेटे बाबा गुरदित्ता जी के बेटे श्री (गुरु) हरिराय साहिब को गुरगद्दी सौंपते हुए श्री गुरु हरिराय साहिब की तीन परिक्रमा कीं और पांच पैसे व नारियल भेंट कर सिक्खों के सातवें गुरु घोषित किया।

श्री गुरु हरिगोबिंद जी का शरीर त्याग

इस तरह गुरगद्दी की जिम्मेदारी श्री (गुरु) हरिराय साहिब को सौंप कर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ६ चेत, संवत् १७०१ तद्नुसार ३ मार्च, १६४४ ई को कीरतपुर पातालपुरी के स्थान पर ज्योति जोत समा गए।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सिक्ख पंथ को निर्णायक मोड़ दिया

*-डॉ. महीप सिंघ**

इतिहास में ऐसे अवसर कभी-कभी आते हैं जिन्हें निर्णायक कहा जाता है और जिनमें घटी-घटनाएं समय का रुख बदल देती हैं। जातियों, राष्ट्रों, धर्मों के इतिहास में ऐसे अवसर जब भी आए हैं उन्होंने न केवल इतिहास की गति बदली है बल्कि अपनी अस्मिता को नई पहचान भी दी है। कलिंग का युद्ध न हुआ होता, सम्राट अशोक ने वह व्यापक जनसंहार अपनी आंखों से न देखा होता तो बुद्ध का संदेश क्या इतना विश्वव्यापी हुआ होता। इसी प्रकार यदि ईसा को सूली पर न चढ़ाया गया होता अथवा कर्बला के मैदान में हुसैन की शहादत न हुई होती तो क्या ईसाई और इस्लाम धर्मों का वही स्वरूप होता जो आज है?

जिस युग में श्री गुरु नानक देव जी का आविर्भाव हुआ था उसमें इस देश में दक्षिण से उभरी हुई भक्ति की लहर उत्तर भारत में भी पूरी तरह से व्याप्त हो चुकी थी। यह लहर भी दो-मुखी होकर बह रही थी। इसका एक स्वर प्रभु-आराधना में इस प्रकार लीन था कि उसकी चिंता का एकमात्र बिंदु परलोक था। संसार उसे पूरी तरह मिथ्या दिखाई देता था और इहलोक का हर कार्य-कलाप झूठी माया का प्रसार मात्र था। भक्ति-धारा का दूसरा मुख प्रभु-आराधना को इहलोक की समस्याओं से तोड़ कर नहीं देखता था। सांसारिक दायित्वों और सामाजिक सरोकारों के प्रति वह सजग था। अन्याय, अनीति और असमानता के विरुद्ध संघर्षपूर्ण जीवन शैली उसे 'ईश्वरीय कार्य' ही लगती थी। गुरु नानक साहिब की भक्ति-धारा जिस जीवन शैली का निर्माण करती है उसमें लोक-संग्रह की भावना सर्वप्रमुख होती है। राज्य-व्यवस्थाएं प्रारंभ में ऐसे आंदोलनों को कौतूहल की दृष्टि से देखती हैं, फिर उसके प्रति अपनी अनुकंपा-दृष्टि अपना कर उसे अपने अनुकूल बनाना चाहती हैं। यदि वह आंदोलन अधिक लोकप्रिय होता दिखाई देता है तो उसके प्रति उनके मत में शंकाएं और आशंकाएं जन्म लेना शुरू करती हैं और मौका मिलते ही व्यवस्था तंत्र उस पर अंकुश लगाने का प्रयास करने लगता है, दमन-चक्र प्रारंभ हो जाता है और फिर सीधे टकराव की नौबत आ जाती है।

सिक्ख आंदोलन के साथ भी ऐसा ही हुआ। श्री गुरु नानक देव जी ने जिन आदर्शों और अभिप्रायों को लोगों के सामने रखा था उसने सबसे पहले उस पुरोहित व्यवस्था को व्याकुल किया जिसने अंधविश्वास, जात-पात, ऊंच-नीच और अन्य अनेक रूढ़िग्रस्त मान्यताओं को अपना आधार बनाया हुआ था। श्री गुरु नानक देव जी ने तत्कालीन शासन-व्यवस्था पर भी अनेक कटु टिप्पणियां की थीं, जिससे निश्चित हो यह व्यवस्था भी चौंकी होगी।

जिस समय श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत हुई, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की आयु मात्र ११ वर्ष की थी। वे गुरु-परंपरा के 'छठवें' उत्तराधिकारी बने थे। उनके सामने वही निर्णायक घड़ी थी। इस विषय घड़ी में उन्होंने जो निर्णय लिया उसने संसार के

**एच-१०८, शिवाजी पार्क, नई दिल्ली-११००२६*

इतिहास में एक सर्वथा नया पृष्ठ जोड़ दिया। उनके दादा श्री गुरु रामदास जी ने अमृतसर नगर को बसाने का काम आरंभ किया था। उनके पिता श्री गुरु अरजन देव जी ने अमृत सरोवर में श्री हरिमंदर का निर्माण करवाया था और उसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब को प्रतिष्ठित कर असंख्य लोगों की आत्मिक श्रद्धा को तृप्त करने और जीवन के उच्चतर अभिप्रायों से उन्हें जोड़ने का काम किया था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री हरिमंदर साहिब के सामने, कुछ अंतर पर 'अकाल बुंगा' अथवा 'श्री अकाल तख्त साहिब' की स्थापना की। श्री हरिमंदर साहिब की छत्र-छाया में एक नया 'तख्त' उभरा जिसे सांसारिक शक्ति अर्जित किए हुए शक्ति मदांध शासकों के 'तख्तों' को चुनौती देने का काम करना था। उन्होंने परंपरा से चली आ रही सैली-टोपी उतार कर पगड़ी धारण की जो सामाजिक दृष्टि से श्रेष्ठता और उच्चता की चिन्ह थी। सामान्यत: योद्धा और शासक वर्ग के लोग एक तलवार धारण करते थे। उन्होंने दो तलवारें धारण कीं और घोषित किया कि गुरु नानक पातशाह की गद्दी के उत्तराधिकारी होने के नाते ये लोगों का आध्यात्मिक (पीरी) पथ-प्रदर्शन तो करेंगे ही, अब वे पीड़ित, दलित और गुलाम जनता को सांसारिक (मीरी) दृष्टि से समुन्नत बनाने का अभियान भी चलाएंगे।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने दूर-दूर तक फैले हुए अपने सिक्खों को आदेश भेज दिए कि अब 'कार-भेंट' के रूप में घोड़े, अस्त्र-शस्त्र तथा अन्य युद्ध सामग्री लाई जाए। पहले श्री हरिमंदर साहिब में भजन-कीर्तन करने, सुनने तथा गुरबाणी का पाठ करने वाले, साधु-जन आते थे। वे उसी प्रकार आते रहे, किन्तु इनके साथ उन किशोर और युवा वर्ग के उत्साही लोग भी आ जुड़े जो शबद-कीर्तन और गुरबाणी का रस भी लेते थे और उसी के साथ श्री अकाल तख्त साहिब के सामने के क्षेत्र में व्यवयाम करते थे, कुश्ती लड़ते थे, तलवार चलाना सीखते थे, नेजा फेंकने और तीर-कमान चलाने का अभ्यास करते थे, घुड़सवारी करते थे। गुरगद्दी पर बैठकर लोगों को उपदेश देते और बाद में शिकार खेलते। निरंकुश शासन तंत्र ने सोचा था कि श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद सिक्खों की यह लहर अपने आप को सिकोड़ लेगी और अपना सारा ध्यान भजन-पूजन में लगाने लगेगी। तंत्र ने यह सोचा था कि ११ वर्ष के बाल श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अपने पिता की शहादत से इतना भयभीत हो जाएंगे कि वे कुछ भी सोचने की जुर्रत नहीं करेंगे, किन्तु ऐसा नहीं हुआ। युवा गुरु जी ने संपूर्ण आंदोलन को एकदम नए स्वरूप में ढालने का निश्चय कर लिया। इससे पहले अभी तक लोगों ने सिक्ख आंदोलन का संत-रूप ही जाना था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने उसमें 'सिपाही' रूप का समावेश किया और यह संकेत दिया कि संपूर्ण न केवल 'संत' होता है और न केवल 'सिपाही'। उसे 'संत-सिपाही' बनना होता है।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जो अभियान शुरू किया था उससे शासन-तंत्र का चौकन्ना हो जाना स्वाभाविक था। परिणाम वही हुआ जो अपेक्षित था। उन्हें कैद करने के आदेश जारी हो गए। १७ वर्ष की आयु में उन्हें ग्वालियर के दुर्ग में नजरबंद कर दिया गया। यह नजरबंदी लगभग दो वर्ष तक रही। जहांगीर की मृत्यु के पश्चात जब शाहजहां मुगल साम्राज्य की गद्दी पर आसीन हुआ तो दमन और अन्याय का चक्र अधिक तेज हो गया। इसी समय अपराज्य समझी जानी वाली मुगल शक्ति से श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का सीधा सशस्त्र टकराव शुरू हो गया। उनके द्वारा संगठित

सिक्ख सेना ने चार बार मुगल दस्तों से टक्कर ली और उन्हें पराजित किया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इस देश में इतिहास की धारा को एक नया मोड़ दे दिया था। उन्होंने यदि यह मोड़ न दिया होता तो उस सिक्ख-शक्ति का जन्म नहीं हुआ होता जिसने १८वीं सदी में इस देश पर उत्तर-पश्चिम की ओर से होने वाले निरंतर आक्रमणों का मुंह मोड़ दिया था और फिर एक विशाल खालसा राज्य की स्थापना की। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सम्पूर्ण सिक्ख आंदोलन को यदि वह तेवर और नया रूप-रंग न दिया होता तो सिक्ख-आंदोलन देश में उभरे अनेक छोटे-मोटे धार्मिक पंथों की तरह एक छोटा-सा धार्मिक समुदाय बन कर रह गया होता। अत: श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का सिक्ख पंथ को, वक्त की आवश्यकताओं के अनुरूप, उपयुक्त दिशा देने में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है जिससे इंकार कदापि उचित न होगा।

कविता

जीवन

जीवन एक धारा
पर है एक अनमोल खजाना
यह धारा बह जाएगी लहरों के संग
लहरें उठेंगी एक तेज बहाव के साथ
इस बहाव में है ज्ञान रूपी अमृत
और इस ज्ञान रूपी नाव में बैठकर
हम हो जाएंगे संसार सागर से पार।

*-बीबा जसप्रीत कौर 'जस्सी', **11-A/1-A**, गुरु ज्ञान विहार, जवद्दी रोड, डुगरी, लुधियाना।*

. . . छठम पीरु बैठा गुरु भारी

*-स. गुरदीप सिंघ**

भाई गुरदास जी ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के बारे में लिखा है :

पंजि पिआले पंजि पीर छठमु पीरु बैठा गुरु भारी।
अरजनु काइआ पलटि कै मूरति हरिगोबिंद सवारी। . . .
दलिभंजन गुरु सूरमा वड जोधा बहु परउपकारी।
(वार १:४८)

पंजि पीर (श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी) पंजि पिआले (सत, संतोख, दया, धर्म, धीरज) छठमु पीरु (श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब)।

श्री गुरु अरजन देव जी के तौर-तरीके बारे 'ब-सयासत व ब-यासा-रसानंद' का हुक्म जारी करते समय जहांगीर ने बखशी फरीद (मुरतजा खान) को यह भी आज्ञा दी कि सतिगुरु के परिवार को अपनी देख-रेख में रखे। इसी हुक्म और नीति के अधीन श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को ग्वालियर के किले में कैद करके रखा गया। जब गुरु जी को रिहा करने का समय आया तो गुरु जी ने कैद में साथ रह रहे ५२ बंदी राजाओं को भी रिहा करवाया। इस प्रकार सतिगुरु जी 'बंदी-छोड़ दाता' कहलवाए।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को शाही सेना के साथ चार बड़े युद्ध करने पड़े जिनमें आक्रमण की नीति सदा विरोधियों की तरफ से रही। चारों ही युद्धों में सफलता ने गुरु जी के चरण चूमे, परन्तु आपने किसी भी इलाके की एक इंच तक जगह पर अपना कब्जा नहीं किया। ये जंग उन्होंने कब्जा करने के लिए नहीं किए बल्कि धर्म की सलामती, आत्म-रक्षा, कायदे-कानून और न्याय के हित में किए।

दबिसात-ए-मजाहब में लिखा है "उस (गुरु साहिब) पर कई बार भारी लश्कर चढ़ कर आए पर वह अल्ला की कृपा से हर समय कामयाब ही निकलता रहा।" सन् १९३९ में (गुरु जी द्वारा) बसाए गए नगर श्री हरिगोबिंदपुर में उन्होंने मुसलमानों के लिए मसजिद तैयार करवाई।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने पंजाब, कशमीर, उत्तर प्रदेश आदि दूर-दूर के इलाकों में धर्म-प्रचार के लिए दौरे किए और श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दर्शाए गए धर्म-सिद्धांतों का प्रचार किया।

आप जी की महान शख्सियत के बारे में अनेक साखियां प्रचलित हैं :

निरवैर : सतिगुरु जी की फौज में मुसलमान योद्धा भी भर्ती थे। उनमें एक १५-१६ वर्ष का जवान पैंदे खान था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने उसको सन् १६१३ में नौकरी पर रखा था। गुरु जी उस पर अपार मेहरबानी करते रहे। १६२८ की लड़ाई में पैंदे खां ने बहुत वीरता दिखाई पर उसके बाद उसमें अहंकार आ गया। सतिगुरु जी ने पैंदे खां को उसके गांव भेज दिया और उसकी तनख्वाह कायम रखी। सन् १६३४

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना। मो : ९८८८१-२६६९०*

में अपनी पत्नी और दामाद के उकसाने पर पैंदे खां बेवफा हो गया और इतना बेवफा हुआ कि लाहौर के सूबेदार से फौज लेकर आ गया और गुरु जी पर हमला कर दिया। वार खाली जाने पर गुरु जी ने हंसते हुए पैंदे खां से कहा कि "पैंदे खां! वार यूं किया करते हैं।" आखिर में जब पैंदे खां घायल होकर गिर गया तो गुरु जी ने सारी बेवफाई भुला कर रणभूमि में ही उसकी तड़पती आत्मा के लिए प्रभु-चरणों में अरदास की।

लाहौर के सूबेदार ने काले खां के नेतृत्व में फौज भेजी थी। जब पैंदे खां मारा गया तो काले खां ने गुरु जी को ललकारा। काले खां बड़े गुस्से में आकर वार करने लगा। उसके तीन वार खाली गए तो गुरु जी ने हंस कर कहा, "काले खां! इस प्रकार तलवार नहीं चलाई जाती, जिस प्रकार तुम चलाते हो। वार तो इस प्रकार किया जाता है।" यह कह कर गुरु जी ने एक की वार में काले खां के दो टुकड़े कर दिए। 'दबिसतान-ए-मजाहब' का लेखक इस युद्ध का हाल लिखता है कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब किसी द्वेष-भाव या क्रोध में आकर तलवार नहीं चला रहे थे बल्कि इस प्रकार महसूस होता था मानो किसी शिष्य को तलवार चलाने का अभ्यास करवा रहे हों।

सच्चा पातशाह : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का सिक्खों पर बहुत प्रभाव था। बादशाह जहांगीर और गुरु साहिब कुछ समय इकट्ठे रहे। एक बार एक स्थान पर अलग-अलग खेमे बनाकर विश्राम कर रहे थे। एक श्रद्धालु गरीब घसियारा जहांगीर के खेमे में आ गया और उसने बादशाह के सामने अपनी कमाई में से एक टका और घास की गठरी भेंट की और साथ ही प्रार्थना की, "हे सच्चे पातशाह! मेरी सेवा प्रवान करो और मुझे जन्म-मरण से मुक्त करो।" जहांगीर समझ गया कि यह सिक्ख गलती से यहां आ गया है। जहांगीर ने उससे कहा कि "मैं 'पातशाह' नहीं 'बादशाह' हूं। तुम मेरे से धन-दौलत, जायदाद जो मांगो, मैं दे दूंगा।" गरीब घसियारे ने कहा कि "धन-दौलत तो यहीं रह जायेगी, मुझे तो मुक्ति चाहिए। मैं जन्म-मरण से रहित होना चाहता हूं।" गरीब घसियारा टका और घास की गठरी उठा कर दूसरे खेमे की ओर चल दिया जहां पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब विराजमान थे।

सन् १६१६-१७ में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब कशमीर गए। श्रीनगर में एक गरीब ब्राह्मण साईं दास और उसकी माता भागभरी रहते थे। माता भागभरी बहुत ही वृद्ध हो चुकी थी। उसने अपने हाथों से सूत कात कर खद्दर का एक कुर्ता गुरु जी के लिए तैयार किया और मन ही मन यही अरदास करती कि "हे सच्चे पातशाह! आप स्वयं यहां आकर मुझ निमाणे की यह तुच्छ भेंट स्वीकार करके यह कुर्ता पहन लो।" गुरु जी जब श्रीनगर की तरफ आए तो माता भागभरी का तैयार किया कुर्ता पहन कर उसे निहाल किया।

सन् १६३० में गुरु जी डरौली गए हुए थे। डरौली से २० कोस की दूर पर एक कसबे तुकलानी में एक गरीब सिक्ख भाई साधू सिंघ और उसका पुत्र भाई रूपा रहते थे, जो रोज जंगल में आजीविका के लिए लकड़ी काटने जाया करते थे। रोटी अपने साथ लेकर जाते और पीने के लिए पानी की एक टिंड भरकर ले जाते जिसे जंगल में किसी पेड़ के साथ लटका देते। काम समाप्त कर खाना खाने के बाद पानी पीते।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी

*-स. सुरजीत सिंघ**

'गुरु' का अभिप्राय है कष्टों से मुक्त करने वाला, क्योंकि 'गु' शब्द का अर्थ है 'अंधेरा' और 'रु' का अर्थ है 'मिटाने वाला' अर्थात् अंधेरे को मिटाने वाला भावार्थ मनुष्य में ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाला ही 'गुरु' है। मध्य काल में चारों ओर हाहाकार और त्राहि-त्राहि मची हुई थी जहां पुरुष के सम्मान को, न्याय के अधिकार को, स्त्री के सतीत्व को एवं मानव की मानवता को ध्वस्त करते हुए अधर्म-असत्य का जैसे प्रलय ही आ रहा था।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी गुरु-पिता श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के उपरांत ११ वर्ष की आयु में गुरगद्दी पर आसीन हुए। गुरु-परिवार से संबंधित होने के फलस्वरूप सद्भावना, सेवा, परोपकार एवं निरपेक्षता जैसे गुण आप जी को विरासत में ही मिले हुए थे। उस समय की अत्याचारी एवं अन्यायी हकूमत से लोहा लेने के लिए आपने मीरी और पीरी अर्थात् भक्ति और शक्ति की दो तलवारें धारण कीं जो कि एक गरीब, मजलूम एवं धर्म की रक्षा के लिए और दूसरी अत्याचार व पाप से लड़ने के लिए थी। भक्ति और शक्ति का संगम होने से अर्थात् संत-सिपाही के रूप में सर्वत्र वीर रस का संचार होने लग गया और राजसी आन-शान के प्रतीक वस्त्र भी गुरु जी धारण करने लग गये।

अब गुरु जी ने अमृतसर में लोहगढ़ का किला निर्माण करवा लिया। शहीदी जत्थे सैनिक भेष में अपनी जान हथेली पर रखकर गुरु जी की सेवा में हर समय मर-मिटने को तैयार रहने लगे। भक्ति के स्रोत श्री हरिमंदर साहिब के सामने ही शक्ति के स्रोत श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना कर गुरु जी अब प्रातः एवं सांय काल दरबार लगाने लगे जहां धार्मिक प्रवचनों के साथ-साथ वीर रसी वारों का गायन भी होने लगा। जन-मानस में आप 'सच्चे पातशाह' के नाम से प्रख्यात थे।

गुरु जी की बढ़ती ख्याति, आध्यात्मिकता एवं प्रभुत्व से घबराकर मुगल हकूमत के समकालीन क्रुद्ध बादशाह जहांगीर ने अकारण ही गुरु जी को कैद कर ग्वालियर (म. प्र.) के किले में बंद कर दिया। गुरु जी के ग्वालियर किले में प्रवेश से वहां का वातावरण भक्ति एवं वीर रस से आलौकिक, मंगलमयी तथा रसदायक हो गया। यह किला अंदर एवं बाहर दोनों ओर से एक तीर्थ-स्थल के रूप में जाना जाने लगा और गुरु जी के दर्शनों के लिए लालायित बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के जत्थे प्रतिदिन पैदल ही कूच करने लगे।

गुरु जी के प्रत्यक्ष दर्शनों के अभाव में ग्वालियर किले के बाहर ही गुरु जी का स्मरण कर श्रद्धा में नत्मस्तक हो माथा झुकाते हुए श्रद्धालु अपनी धन्यता मानते और वापस लौट जाते, क्योंकि जंगल के बीचो-बीच लगभग ३०० फुट ऊंची पहाड़ी पर स्थित ग्वालियर का

(शेष पृष्ठ २९ पर)

**५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)*

दलिभंजन गुरु सूरमा . . .

*-डॉ मनमोहन सिंघ**

पंजि पिआले पंजि पीर षठमु पीरु बैठा गुरु भारी।
अरजनु काइआ पलटि कै मूरति हरिगोबिंद सवारी।
चली पीड़ी सोढीआ रूपु दिखावणि वारो वारी।
दलिभंजन गुरु सूरमा वड जोधा बहु परउपकारी।
(वार भाई गुरदास जी, १:४८)

मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को उनके ताऊ प्रिथीचंद तथा ताई करमो ने कोई कसर नहीं छोड़ी गुरु साहिब को बचपन में ही खत्म करने की, परन्तु ईश्वर को यह सब मन्जूर नहीं था। उनके द्वारा किये गये तीन हमले व्यर्थ ही गये और परमात्मा ने गुरु जी की रक्षा की। गुरु साहिब जब ग्यारह वर्ष के थे, बाबा बुड्ढा जी ने पाचवें पातशाह की आज्ञानुसार उन्हें गुरगद्दी पर विराजमान किया और मीरी-पीरी की प्रतीक दो तलवारें पहनाईं।

जब गुरु साहिब गुरगद्दी पर विराजमान हुए तो उन्होंने देखा कि मुगलों के द्वारा बहुत जुल्म किये जा रहे हैं और श्री गुरु अरजन देव जी को बगैर किसी कसूर के गर्म तवी के ऊपर बैठाया गया, फिर उबलते पानी की देग में बिठाया गया। इस प्रकार वे शहीदी प्राप्त कर समा गये। इन जुल्मों का मुकाबला करने के लिए उन्होंने दो तलवारें धारण कीं जिनमें से एक मीरी के लिए और दूसरी पीरी के लिए थी। उन्होंने संगत को हुक्म किया कि वे भेंट के रूप में धन के साथ-साथ घोड़े व हथियार भी लेकर आये। यह समय की मांग थी कि लोगों को स्वाभिमान से जीना सिखाया जाए तथा वीर रस की भावना बढ़ाई जाए। जहांगीर बादशाह ने जब बख्शी फरीद को श्री गुरु अरजन देव जी की शाहदत के बारे में हुक्म दिये तो यह भी कहा था कि सतिगुरु जी के परिवार पर भी निगरानी रखी जाये। छठे गुरु जी को ग्वालियर के किले में कैद किया गया और अंत में बादशाह जहांगीर को मियां मीर व वजीर खां के समझाने पर रिहा किया गया। गुरु जी ने अकेले रिहा होने से मना कर दिया। जहांगीर को उनके साथ ५२ अन्य राजा भी रिहा करने पड़े। इस पर गुरु जी को 'बंदीछोड़ दाता' भी कहा गया और इसी खुशी में लोगों ने 'बंदीछोड़ दिवस' मनाया।

इस प्रकार गुरु जी ने न केवल सिख फौज ही बल्कि भक्ति व शक्ति का सुमेल भी किया जो कि उस समय की मांग थी। शक्ति का प्रयोग किसी स्वाथ या प्रलोभन के लिए नहीं था, परन्तु धर्म चलाने के लिए जरूरी था। आरंभ से ही धर्म और राजनीति को इकट्ठा किया गया जो अब तक प्रचलित है। मीरी की तलवार का प्रयोग पीरी की रक्षा के लिए है। इसलिए गुरु साहिब ने दो तलवारें पहनीं और आत्मिक व सांसारिक जीवन को सुखमय कर दिया। श्री हरिमंदर साहिब के सामने श्री अकाल तख्त साहिब पर पंथक समस्याओं पर विचार किया जाता है और हर निर्णय सामने श्री हरिमंदर साहिब में सुशोभित

**८८९, फेज ९, मोहाली-१६००६२*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज गुरु-मर्यादाओं को ध्यान में रखकर लिया जाता है।

गुरु साहिब जी ने पंजाब, कश्मीर व यू. पी. आदि के क्षेत्रों में प्रचार-भ्रमण किया। उन्हें गुजरात में पीर दऊला मिला जिसने गुरु साहिब के शाही ठाठ-बाठ देखकर कुछ प्रश्न किये :

हिदू क्या और पीरी क्या ?
औरत क्या और फकीरी क्या ?
दौलत क्या और त्याग क्या ?
पुत्र क्या और वैराग क्या ?

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने इस प्रकार उत्तर दिया:

औरत ईमान,
पुत्र निशान,
दौलत गुज़रान,
फकीर हिन्दू न मुसलमान।

गुरु साहिब ने अपने जीवन में मुगल सेना के साथ चार युद्ध लड़े। यहां पर यह भी वर्णनयोग्य है कि युद्ध करने के लिए पहल विरोधियों द्वारा की जाती थी। चारों युद्ध गुरु साहिब ने जीते परन्तु फिर भी उन्होंने किसी के क्षेत्र पर अपना अधिकार नहीं जमाया। इससे स्पष्ट है कि गुरु जी ने युद्ध कोई राज्य प्राप्त करने के लिए नहीं किये परन्तु धर्म तथा आत्म-रक्षा, उसूलों की दृढ़ता व न्याय के लिए लड़े थे तथा ये युद्ध उस समय लड़े थे जब विरोधियों द्वारा उन्हें दबाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी गयी।

गुरु साहिब जी का किसी के साथ कोई वैर नहीं था। फौज में कई मुसलमान सैनिक तथा सेनाधिकारी थे, जैसे कि पैंदे खां, जानी खां व रोशन शाह आदि। गुरु जी युद्ध में किसी पर भी पहले हमला नहीं करते थे, बल्कि जब कोई विरोधी आकर हमला करता था तो उसका वार रोकने के उपरांत ही वे वार करते थे। तब ऐसा लगता था जैसे गुरु जी उन्हें हमला करने का ढंग सिखा रहे हों।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि गुरु साहिब ने स्वार्थपन से कुछ नहीं किया बल्कि लोगों को निडर होकर तथा स्वाभिमान के साथ रहने के लिए प्रेरित किया।

. . . छठम पीरु बैठा गुरु भारी

(पृष्ठ १६ का शेष)

गर्मी के दिन थे। एक दिन दोपहर को पानी की टिंड को हाथ लगाया तो पानी बर्फ की तरह ठंडा था। बाप-बेटा (भाई साधू और भाई रूपा) दोनों के मन में विचार आया कि पानी बहुत ठंडा है। यदि गुरु पातशाह इस पानी को पीते तो इनको कितना आनंद आता! भूख-प्यास से व्याकुल हो दोनों ही मन में गुरु जी को याद करते रहे। इतनी ही देर में क्या देखते हैं कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने कड़कती धूप में अपने घोड़े को वहां लाकर रोका और भाई साधू तथा भाई रूपा के मन की मुराद को पानी पीकर पूरा किया। सतिगुरु जी ने भाई रूपा को गांव बसाने का हुक्म दिया।

श्री अकाल तख्त साहिब की मर्यादा

*-डॉ. बलबीर सिंघ**

पवित्र नगर श्री अमृतसर साहिब की हृदय-स्थली पर स्थित श्री हरिमंदर साहिब (श्री दरबार साहिब) के बिलकुल सामने श्री अकाल तख्त साहिब सुशोभित है। इसकी स्थापना छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने भाई गुरदास जी और बाबा बुड्ढा जी से करवाई।

इस महान तख्त की रचना का एक विशेष उद्देश्य था। दिल्ली के बादशाह के तख्त से लोक-विरोधी फैसलों को चुनौती देने, आम जनता के मन में न्याय के प्रति विश्वास और अन्याय का विरोध करने के जज्बे को दृढ़ करने के लिये श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तख्त पर विराजमान हुये। गुरु महाराज ने बाबा बुड्ढा जी के हाथों मीरी और पीरी की प्रतीक दो तलवारें पहनीं और सिक्ख धर्म के इहितास को एक नई दिशा दी।

श्री गुरु नानक देव जी की निर्मल पंथ की धारणा को पहले पांचों गुरु साहिबान ने बड़ी ही श्रद्धा, विश्वास, दृढ़ता, संयम और आदर से न केवल अपनाया अपितु निभाया भी और सत्य, प्रेम, नम्रता तथा स्नेह से अपना कर्त्तव्य निभाया। उन्होंने सिद्धांतों से कभी भी समझौता नहीं किया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने समय की नब्ज को पहचाना। उन्हें महसूस हुआ कि इनके पूर्व के गुरु साहिबान की सहिष्णुता को जालिम बादशाह उनकी कमजोरी समझ बैठा है। पिता-गुरु शिरोमणि शहीद श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत ने उन्हें यह निर्णय लेने पर मजबूर किया कि अन्याय और जुल्म को बर्दाश्त करना अब उचित नहीं और इसका डटकर मुकाबला करना चाहिये। श्री अकाल तख्त साहिब राजनीति का पहला केन्द्र-स्थल था। श्री गुरु अरजन देव जी ने "भाणा मंनणा" के सिद्धांत के साथ ही अपने उत्तराधिकारी की भविष्य-नीति की रूप-रेखा भी तैयार कर दी थी--"अगर अत्याचारी शासक का मन 'मेरी' (संत) शाहदत से भी न भरे तो उसके अत्याचारों का मुकाबला 'सिपाही' के समान शस्त्रों से करने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिये।" इसी लिये श्री हरिगोबिंद साहिबे मीरी-पीरी की प्रतीक दो तलवारें--एक 'संत' की और दूसरी 'सिपाही' की प्रतीक, धारण कर गुरगद्दी पर विराजमान हुये।

श्री हरिमंदर साहिब जहां भक्ति का पवित्र स्थान है वहीं श्री अकाल तख्त राजनीति और राजसी शक्ति का प्रतीक है।

आवश्यक है कि हम श्री अकाल तख्त साहिब की मर्यादा और इसके निर्माण के उद्देश्यों के बारे में जानें। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि श्री अकाल तख्त साहिब धार्मिक, सामाजिक जत्थेबंदी और राजसी सोच-विचार का केन्द्र है। जहां एक ओर इसका उद्देश्य अत्याचारी और अन्यायकर्त्ता को सही मार्ग पर चलाना था वहीं दूसरी ओर धार्मिक अपराधियों को दंडित करना, रहित मर्यादा के नियमों की रक्षा करना और समय-समय पर सिक्ख पंथ के

* Flat No. 212, Dhudial Appt., Madhuban Chowk, Pitampura, Delhi-110034

उत्थान और उन्नति के लिये आदेश (हुकमनामा) जारी करना भी है। श्री अकाल तख्त साहिब का जत्थेदार (सिंघ साहिब) सिक्ख पंथ के पंथक शिरोमणि जाने जाते हैं। इनके आदेशों की अवहेलना करना पंथक अपराध माना जाता है। इतिहास साक्षी है कि जत्थेदार अकाली फूला सिंघ द्वारा बुलाये जाने पर महाराजा रणजीत सिंघ भी श्री अकाल तख्त साहिब के सामने घुटने टेक कर बैठ गये और जत्थेदार साहिब की कोड़े खाने की सजा को स्वीकार किया, कोई आना-कानी नहीं की, क्योंकि वे श्री अकाल तख्त साहिब को पूर्णतः समर्पित सिक्ख थे।

वैसे तो गुरु साहिबान के अलग-अलग समय पर विभिन्न उद्देश्यों और आदेशों के लिये लिखे गये पत्रों को भी 'हुकमनामा' कहते हैं परन्तु यहां हमें यह जानना है कि श्री अकाल तख्त साहिब, क्योंकि सर्वोपरि स्थान है, इसलिये स्थान से जारी किया गया आदेश सबके लिये मानना लाजमी है और इसी आदेश को 'हुकमनामा' कहते हैं।

श्री अकाल तख्त साहिब से सबसे पहला हुकमनामा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जारी किया था। यह हुकमनामा था कि "सभी सिक्खों को आत्म-रक्षा के लिये शस्त्र धारण करना आवश्यक है।" यह स्पष्ट हो जाता है कि आत्म-रक्षा के लिये ही हथियार उठाना है किसी को डराने या जुल्म करने के लिये नहीं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा जारी हुकमनामे, सरबत्त खालसा के फैसले के बाद बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा जारी हुकमनामा आज भी कई स्थानों पर सुरक्षित है। १९२० में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी नाम की सर्वोच्च धार्मिक संस्था कायम की गई। कुछ खास हुकमनामे इस प्रकार हैं :

जत्थेदार अच्छर सिंघ ने १९६१ में मास्टर तारा सिंघ के विरुद्ध मरण-व्रत तोड़ने के लिये हुकमनामा जारी किया। ऐसा ही हुकमनामा संत फतेह सिंघ के विरुद्ध तथा आठ अन्य सिक्खों के विरुद्ध जारी किया गया। जिनके विरुद्ध हुकमनामा जारी होता है उन्हें 'तनखाहिया' करार दिया जाता है और तनखाह (धार्मिक सजा) लगाई जाती है। उपरोक्त सभी ने सिर झुकाकर तनखाह स्वीकार की।

१९७८ में श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी साधू सिंघ ने निरंकारियों के विरुद्ध हुकमनामा जारी किया, क्योंकि वैसाखी के दिन इन्होंने १३ निरीह सिक्खों की हत्या की थी। उनके साथ सभी सामाजिक सम्बंध तोड़ लिये गये।

गत वर्षों में हुकमनामे जारी कर निम्न को 'तनखाहिये' घोषित किया गया, जिनमें ज्ञानी जैल सिंघ (तत्कालीन राष्ट्रपति), स. सुरजीत सिंघ बरनाला (तत्कालीन मुख्यमंत्री, पंजाब) स. बूटा सिंघ, निहंग संता सिंघ (सभी १९८४ के श्री अकाल तख्त साहिब पर हमले के बाद)।

श्री अकाल तख्त साहिब का जत्थेदार एक निर्मल चरित्र, गहरी आस्था, धार्मिक ज्ञान का उदाहरण और सत्यनिष्ठ व्यक्ति होता है। उसे चुना जाता है, नियुक्त नहीं किया जाता। आज समय के साथ कई परिवर्तन आये हैं, किन्तु सिक्ख पंथ की सच्ची निष्ठा, पांचों तख्त साहिबान के सिंघ साहिबान की निष्काम सेवा और पंथ की रहित मर्यादा के हुकमनामों, गुरमतों और सरबत्त खालसा के निर्णयों को अक्षुण और सुरक्षित रखा है।

श्री अकाल तख़्त साहिब

*–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

नाम जपने के साथ, तलवार उठाना भी जरूरी है।
धर्म निभाने के साथ, राजनीति अपनाना भी जरूरी है।
हमारी सहनशीलता को, जो कमजोरी समझते हैं,
उन दुश्मनों को अपना, बाहुबल दिखाना भी जरूरी है।
मीरी-पीरी के मालिक ने, इक नया इतिहास बनाया।
अकाल पुरख के हुक्म से, श्री अकाल तख्त बनाया।
बड़े-बड़े सिक्ख योद्धा, ज्ञानी, विद्वान इसके जत्थेदार बने।
सिक्खी के उसूलों, मर्यादा और शान के पहरेदार बने।
जुल्म और जब्र से कोई, हमको झुका सकता नहीं,
श्री अकाल तख्त की अगवाई में, ऊंची ललकार बने।
नि:सहाय, मजलूमों को, जालिमों से बचाने के लिए,
लड़ाई के मोर्चों पर लड़ने वाले, अगुआ-सरदार बने।
छल-कपट से रहित राजनीति का, सही मार्ग दिखाया।
गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने, श्री अकाल तख्त बनाया।
उसूलों से जो गिर जाए, उसे रास्ते में रुकना पड़े।
पापी-गुनहगारों को इसके, सामने आ झुकना पड़े।
सतिगुरु बख्शनहार है, वो गुनाह बख्श देता है,
शर्त है कि अभिमान के मचान से, नीचे उतरना पड़े।
गलतियों के पुतलों से गलतियां हो जाती हैं,
अकाल पुरख का हुक्म मानना पड़े, रजा में रहना पड़े।
मीरी-पीरी के मालिक ने, उस मालिक का आसन दिखाया।
अकाल पुरख के हुक्म से, श्री अकाल तख्त बनाया।
सन् चौरासी में निरंकुश शासन ने, फिर रूप दिखा दिया।
श्री दरबार साहिब के अनेक श्रद्धालुओं को, बंदी बना दिया।
पवित्र परिक्रमा के सीने को, छलनी-छलनी कर दिया।
बारूद और तोपों से लदा हुआ, टैंक पे टैंक चढ़ा दिया।
बेगुनाह और निहत्थे श्रद्धालुओं को, गोलियों से भूना,
मानवीय भावनाओं को कुचला, मानवता को भुला दिया।
श्री अकाल तख्त की इमारत को, तोपों के गोले दाग ढहाया।
वीर सिक्खों ने अकाल पुरख का, आसन फिर बनाया।
श्री अकाल तख्त की शान का, बखान कोई नहीं कर सकता।
इसकी सर्वोच्चता व महानता का, बयान कोई नहीं कर सकता।
हर सांसारिक तख्त इसके आगे तुच्छ लगता है,
अकाल तख्त की दिशा बिना, काम महान् कोई नहीं कर सकता।
सारी दुनिया के सिक्ख, इससे सच्ची रहनुमाई लेते हैं,
कोई सच्चा सिक्ख इसके हुक्म का, अपमान कभी नहीं कर सकता।
तनखाह लगवाकर गुनाह माफ कराने का, मार्ग दिखाया।
गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने, श्री अकाल तख्त बनाया।

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो: ९८८२२-५४९९०*

सवालों का जवाब

-डॉ. कीर्ति केसर*

डल्ल झील के किनारे . . .
प्रकृति की सुंदरता
पत्थर, पानी और मिट्टी से लिखा गया।
फूलों-फलों और वल्लरियों की
सुगंधों से महकाया गया।
चनार के दरख्त, जीवन के नाम
राग-अनुराग, सुर-ताल और लय से गाते हैं।
कभी भावुक गीत की तरह
कभी आरती की तरह
मेरी संवेदना के तार झनझना उठते हैं।
मन, चित्त और चेतना
तरंगित, उलसित
और काया
रोमांचित-मादक-सी हो दमकने लगती है
स्तुति मोहिनी मनरंजिनी
भिन्न-भिन्न मोहक मुद्राओं में
प्रकट होती प्रकृति नटी की
उसके रचयिता की।
महसूस करती हूं
कुछ-कुछ इबादत जैसा।
नास्तिकता की शुद्ध आस्था में
प्रश्न भी उठते हैं कई :
इतिहास ने क्यों याद रखे
सदियों तक
उन सम्राटों-सुलतानों के
अत्याचार-हिंसा-युद्ध
और विध्वंस के खेल
राजनीति के घिनौने षड़यंत्र
अय्याशियों के किस्से
कत्लगाहों के आंकड़े?
नफरतों का यह इतिहास
क्यों हस्तांतरित हो रहा है?
क्यों पीढ़ी-दर-पीढ़ी दोहराया जा रहा है
नफरतों को जिंदा रखने की चाहत में?
छतनार-खुशबूदार
हरियाले चनारों पर
खून किसने छिड़का?
बादामबारी क्यों है उदास?
हरि पर्वत क्यों निराश?
खीर भवानी शक्तिहीन
पर्वत शंकराचार्य उदासीन
गुलमर्ग, सोनमर्ग की बर्फ में
आग किसने लगाई डल्ल के पानी में?
उतरते सिंदूरी सूरज को
चिंगारी किसने दिखाई?
शिकारों पर फूल बेचती
बालाओं को किसने डराया?
हरि महल के कमल-ताल को
किसने, क्यों छला?
हम सबको देना होगा
इन सारे सवालों का जवाब!
इन सारे सवालों का जवाब!

*१०८६/E, मोहल्ला गोबिंदगढ़, एस. डी. कालेज रोड, जलंधर-१४४००१, मो. ९८७८७-८४०१६

बाला प्रीतम श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की संक्षिप्त जीवन-गाथा

*-स. गुरबख्श सिंघ 'प्यासा'**

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी को उनके श्रद्धालु 'बाला प्रीतम' के उपनाम द्वारा अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं, क्योंकि श्री गुरु हरिक्रिशन जी जब गुरगद्दी पर शोभायमान हुए तो उनकी आयु सवा पांच वर्ष की थी।

प्राय: ईश्वरी विधान से अनभिज्ञ एवं अपने थोथे ज्ञान के अहंकार में ग्रस्त कुछ भ्रमित व्यक्ति, सत्य-स्वरूप महान आत्माओं पर शंका ही नहीं करते वरन् उनकी परीक्षा लेने पर भी उतारू हो जाते हैं। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी की बाल-अवस्था देखकर पंडित लाल चंद ने चुनौती दे डाली थी, परन्तु अंत में मुंह की खाकर गुरु-चरणों में गिर पड़ा था। वो यह तथ्य भूल गया था कि सृष्टिकर्त्ता, सत्य के संदेश-वाहकों के रूप में जिन पर अपनी कृपा करता है, वे आत्माएं ईश्वर से एकाकार होती हैं। तभी उनका सहज-आचरण भी साधारण बुद्धि के लोगों की समझ से परे होने के कारण वे उन घटनाओं को चमत्कार अर्थात् करामात का नाम दे डालते हैं।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी ने जीवन में घटी ऐसी दो मुख्य घटनाओं को भी इसी कोटि में रखने की प्रवृत्ति पाई जाती है जबकि वह सहज आचरण था। उद्देश्य था, अज्ञानता के तिमिर को दूर करके सत्य का प्रकाश करना।

सिद्धि/करामात के बारे में गुरबाणी में फरमान है :

सा सिधि सा करमाति है अचिंतु करे जिसु दाति ॥
नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै एहा सिधि एहा करमाति ॥ *(पन्ना ६५०)*

श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब जी का जन्म सातवीं पातशाही श्री गुरु हरिराय साहिब जी के घर में माता किशन कौर जी की पावन कोख से कीरतपुर साहिब में ८ सावन सं. १७१३ तद्नुसार ७ जुलाई, १६५६ ई. को हुआ।

आपके बड़े भाई का नाम रामराय था। पिता श्री गुरु हरिराय जी की आज्ञा का उल्लंघन करने के फलस्वरूप गुरु जी ने रामराय से संबंध विच्छेद कर लिये थे क्योंकि रामराय ने श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी का एक शबद बदलने की धृष्टता की थी।

हुआ यूं कि मुगल बादशाह औरंगजेब ने सत्तारूढ़ होने के कुछ समय बाद ही अपनी इस्लामप्रस्ती की कट्टरता के तहत अन्य मतों पर अपनी कुदृष्टि डालनी शुरू कर दी थी। इसी कुटिल नीति के तहत उसने श्री गुरु हरिराय साहिब जी को पत्र लिखा और दर्शनों की अभिलाषा व्यक्त की। गुरु जी ने अपने प्रमुख सिक्खों से विचार-विमर्श किया और अपने बड़े पुत्र रामराय को भेजने का निर्णय लिया। गुरु जी ने रामराय को गुरु-घर की मर्यादा के अनुसार निर्भयतापूर्वक आचरण की सीख देकर दिल्ली भेज दिया। रामराय की विद्वता से औरंगजेब बहुत प्रसन्न हुआ। जैसा कि दारा

२२, प्रभु पार्क सोसायटी, ओल्ड छानी रोड, वडोदरा-३९०००२

शिकोह के इलाज के लिए दवा भिजवाने को गुरु-घर की सर्वकल्याणकारी परंपरा का भी उल्लेख किया और औरंगजेब को प्रभावित करने के लिए कुछ करामातें भी दिखलाईं, जिससे औरंगजेब अत्यधिक प्रभावित हुआ और रामराय की ओर मित्र-भाव दर्शाने लगा। काजियों ने जब उनसे प्रश्न किया कि तुम्हारे गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने इस शबद में *"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥ घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥"* इस्लाम विरुद्ध लिखा है, तो रामराय लड़खड़ा गया और बादशाह को खुश करने के लिए कह दिया कि लगता है 'बेईमान' की जगह भूल से 'मुसलमान' हो गया है। काजी और बादशाह दोनों संतुष्ट हो गए और बादशाह ने रामराय को एक 'खिल्लत' भी दी।

जब श्री गुरु हरिराय साहिब को रामराय के इस कुकृत्य का समाचार मिला तो उन्होंने फरमाया कि जिस मुंह से रामराय ने गुरु नानक साहिब की पावन बाणी को बदलने का दुस्साहस किया है, वे उसके उस मुख को कभी देखना नहीं चाहेंगे। गुरु साहिब ने उससे सारे संबंध तोड़ते हुए उसे गुरगद्दी के लिए अनुपयुक्त करार दिया और अपने अंतिम समय श्री (गुरु) हरिक्रिशन जी को गुरगद्दी पर आसीन कर दिया।

पिता श्री गुरु हरिराय साहिब के ज्योति-जोति समा जाने और अपने छोटे भ्राता श्री (गुरु) हरिक्रिशन जी को गुरगद्दी पर आसीन होने की सूचना जब रामराय को मिली तो वह दिल्ली में ही था। उसने खूब बावेला मचाया और औरंगजेब बादशाह से भी गुहार की कि वह उसके छोटे भाई को यहां बुलाकर उसे न्याय दिलवाए।

इस प्रकार औरंगजेब को एक तीर से दो निशाने साधने के लिए श्री गुरु हरिक्रिशन जी को दिल्ली बुलाने का अच्छा अवसर मिला। अपने आप को अलग रखते हुए राजा जै सिंह (जो गुरु-घर का श्रद्धालु था) द्वारा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को पत्र भिजवाया और प्रार्थना की कि वे उन्हें और विशेष रूप से दिल्ली की सिक्ख संगत को दर्शन देने की कृपा करें। रही बादशाह से मिलने की बात तो उन्हें इसके लिए मजबूर नहीं किया जाएगा। (क्योंकि राजा जै सिंह को इस बात की जानकारी थी कि गुरु जी बादशाह से मिलने के इच्छुक नहीं हैं।) इस पर गुरु जी दिल्ली जाने के लिए तैयार हो गए।

जब वे अंबाला के पास 'पंजोखरा' गांव पहुंचे तो लाल चंद नाम का पंडित, जिसे अपनी विद्वता का बहुत घमंड था, गुरु जी के पास आया और व्यंग्यपूर्वक कहा कि "आप अपने को 'गुरु' कहलाते हो, आप मुझे 'गीता' का अनुवाद करके सुनाएं।" उस समय गुरु जी के पास 'छज्जू' नाम का गूंगा और अनपढ़ व्यक्ति खड़ा था, जो जहां गुरु जी ठहरे थे, वहां जल आदि की सेवा करता था। गुरु जी ने पंडित से पूछा कि "वे स्वयं गीता का अनुवाद करके सुनाएं अथवा छज्जू को कहें कि वो कर दे?" पंडित ने सोचा कि छज्जू तो बोल भी नहीं सकता, वो कैसे अनुवाद करके सुनाएगा? उसने छज्जू के लिए अपनी सहमति दे दी। गुरु जी ने अपने हाथ में पकड़ी छड़ी को छज्जू के सिर पर रखा और पंडित लाल चंद के प्रश्नों का उत्तर देने को कहा। बस, फिर क्या था, छज्जू ने पंडित लाल चंद के प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर दिया। लाल चंद गुरु-चरणों में गिर पड़ा और उसने क्षमा मांगी।

जब गुरु जी दिल्ली पहुंचे तो राजा जै सिंह

ने उन्हें अपने महल में ठहराया। सिक्ख संगत दर्शनों के लिए उमड़ पड़ी। गुरु जी के पावन दर्शन करके रोगियों के रोग दूर होने लगे और उन्हें आत्मिक शांति प्राप्त होने लगी।

बादशाह ने गुरु जी को तोहफे भेजकर दर्शनों की इच्छा प्रकट की, परन्तु गुरु जी ने अस्वीकार कर दिया और कहा कि बादशाहों का हमसे क्या काम हो सकता है? हम तो मात्र 'सतिनाम' का प्रचार करते हैं।

अगले दिन औरंगजेब का पुत्र शहजादा मुअज्जम गुरु जी से मिलने आया तो गुरु जी ने उसे सच्चे नाम का मर्म समझाया। जब शहजादे ने रामराय के गुरगद्दी के दावे की बात कही तो गुरु जी ने उसे गुरगद्दी के बारे में बताया कि यह विरासत में मिलने वाली वस्तु नहीं है बल्कि सेवा-भावना, आज्ञा-पालन एवं गुरु-घर की मर्यादा को कायम रखने जैसे गुणों को सम्मुख रखकर दी जाती है। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती गुरु साहिबान द्वारा अपनाई गई परंपरा की जानकारी दी कि श्री गुरु नानक देव जी ने अपने पुत्रों के स्थान पर अपने शिष्य भाई लहणा जी को गुरगद्दी के उपयुक्त समझा। इसी प्रकार अन्य गुरु साहिबान ने भी योग्यता को वरीयता दी इसमें चाहे गुरु-सपुत्र थे, रिश्तेदार थे या सिक्ख। इसलिए रामराय का दावा निराधार है।

अब औरंगजेब ने राजा जै सिंह को गुरु जी को परखने की बात कही। राजा जै सिंह ने अपनी पटरानी को दासियों वाले वस्त्र पहना कर, अन्य रानियों और दासियों में बिठा दिया और गुरु जी से विनय की कि वे उनकी पटरानी को पहचानें। गुरु जी ने सहजता से पटरानी को पहचान लिया। इससे राजा जै सिंह गुरु जी का और अधिक श्रद्धालु हो गया और श्रद्धास्वरूप अपना महल गुरु जी को अर्पण कर दिया, जहां आजकल 'गुरुद्वारा बंगला साहिब' सुशोभित है।

उन्हीं दिनों दिल्ली में हैजा और चेचक की बीमारी फैल गई। गुरु जी ने अपने सिक्खों को आदेश दिया कि रोगियों की सब प्रकार से सहायता की जाए।

कुछ समय बाद गुरु जी को भी चेचक निकल आई। अपना अंतिम समय जान कर गुरु जी ने सब सिक्खों को ईश्वर की रजा में रहने का उपदेश दिया और गुरगद्दी के लिए 'बाबा बकाले' के शब्दों द्वारा संदेश दिया कि गुरगद्दी के अगले अधिकारी 'बकाला' गांव में हैं और रिश्ते में उनके 'बाबा' हैं।

जिस दिन गुरु जी का देहावसान हुआ वह ३ वैसाख, सं. १७२१ तद्नुसार ३० मार्च, १६६४ ई का दिन था। करुणा की मूर्ति करुणा-निधान में लीन हो गई। यमुना के किनारे जहां गुरु जी का अंतिम संस्कार किया गया वहां 'गुरुद्वारा बाला साहिब' शोभायमान है।

धन्यवाद

हम श्री हरिचंद स्नेही, सोनीपत (हरियाणा) का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने अपनी प्रेरणा द्वारा 'गुरमति ज्ञान' के ५ आजीवन तथा १६ वार्षिक सदस्य बना कर 'गुरमति ज्ञान' के पाठक वर्ग के दायरे को विशाल बनाने में अपना योगदान दिया है। वाहिगुरु श्री स्नेही जी को हमेशा चढ़दी कला में रखे।

दर्शन-उपदेश : श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब बाल-आयु से ही तीक्ष्ण बुद्धि, दूरदृष्टि और निर्मल व्यक्तित्व के मालिक थे। गुरु-पिता की संगत में आप जी संगत को लंगर छकाने और अन्य टहिल-सेवा में लगे रहते थे। श्री गुरु हरिराय साहिब के बड़े पुत्र रामराय ने दिल्ली में औरंगजेब बादशाह की मीठी बातों और प्रभाव में आकर जब पवित्र गुरबाणी की यह पंक्ति *"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर"* की जगह पर *"मिटी बेईमान की पेड़ै पई कुम्हिआर"* का उच्चारण करके धुर की बाणी में तबदीली करने का प्रयत्न किया तो इससे औरंगजेब बादशाह की तो चाहे तसल्ली हो गई, पर श्री गुरु नानक देव जी की 'धुर की बाणी' में तबदीली करनी ऐसा बज्जर गुनाह था जो क्षमा नहीं किया जा सकता था। श्री गुरु हरिराय साहिब ने रामराय के प्रति कह दिया कि "वो हमारे सामने न आए।" श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को सवा पांच साल की आयु में गुरगद्दी की दैवी दात प्राप्त हो गई।

गुरगद्दी की बख्शिश तो धुर-दरगाही है। इसका सम्बंध व्यक्ति की आयु के साथ नहीं है। श्री गुरु अमरदास जी को ७२ साल में और श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को सवा पांच साल में इस दैवी दात की प्राप्ति हुई। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की आयु चाहे छोटी थी, परन्तु 'ज्योति और जुगति' तो जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी वाली ही थी। सिक्ख संगत की अगुआई करने में गुरु जी की ओर से कभी जरा-सी भी ढील नहीं आई थी। हर रोज कीर्तन दरबार सजते। गुरु साहिब नित्यप्रति अमृत वेला को उठते। नाम-सिमरन में आप जी की सुरति लंबा समय जुड़ी रहती थी। गुरबाणी के पाठ का नित्तनेम आप जी का पक्का था। हर रोज गुरु-दरबार के साथ-साथ अटूट लंगर भी चलता रहता था।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के दरबार की झलक इस प्रकार थी : "कीर्तन-कथा उपरांत गुरु-दरबार सजता। संगत की रसदें लंगर में बरताई जाती थीं और माया एवं पदार्थ गरीबों तथा जरूरतमंदों में बांट दिये जाते थे। गुरु जी खुद ब्रह्म-ज्ञान की ईश्वरीय मूरत थे। सुंदर चेहरा था। गुरु-दरबार की सुंदरता दुनियावी बादशाहों के शाही दरबारों से अधिक थी। गुरु-दरबार में आकर हर कोई प्रभु-रंग में रंग जाता था।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के दर पर जो भी आया मन-इच्छित फल प्राप्त करके ही गया। अगर कोई खोटी नीयत से आया, गुरु-दरबार के पारस स्पर्श ने उसको भी खरा कर दिया। उदाहरण है कि जसवंत राय नाम का एक व्यक्ति गुरु-दरबार में चोरी करने और संगत की जेबें काटने के इरादे से आया था। ज्यों ही उसने गुरु जी के सामने आकर नमस्कार की तो श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने गुरबाणी का पाठ किया: *"चोर की हामा भरे न कोइ ॥ चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥"* यह वचन

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१

सुनते ही जसवंत राय के पाप कांप उठे। उसने बुरी सोच और खोटी नीयत के लिए गुरु जी से क्षमा मांगी। इसी प्रकार रोपड़ का रहने वाला एक बड़ा धनी व्यक्ति था राजाराम। वो लड़कियों को जन्म लेते ही मार देता था। जब वो कीरतपुर साहिब गुरु-दरबार में आया तो गुरु जी ने उसको संगत में बैठने से मना कर दिया। उसने गुरु जी से अपने बुरे कर्मों के लिए क्षमा मांगी, गुरु-दरबार में समर्पण भाव से अरदास की और भविष्य में लड़कियों के मारने तथा गलत कर्म करने की तौबा की। वे गुरु-घर का सदा के लिए सिक्ख बन गया। इसी प्रकार एक मानसिक रोगी गुरु-दरबार में आकर कहने लगा "गुरु जी! मुझे चिंता बहुत रहती है। हर समय मन उचाट, परेशान रहता है और कभी भी मन को शांति नहीं मिलती।" गुरु जी ने उपदेश किया: "केश न कटवाओ, गुरबाणी पढ़ो, सुनो और नाम-सिमरन करते रहो।" ज्यों ही उसने उपदेश पर अमल किया उस रोगी के सारे रोग नष्ट हो गए।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की महत्ता बेअंत है। आप जी ने बहुत-से लोगों को मनमुखता से हटा कर, गुरमति के साथ जोड़ा, जैसे श्री नंद चंद को बुरा कर्म त्याग कर गुरसिक्खों जैसा जीवन बनाने के लिए तैयार करना तथा 'जंजीआ' नाम के व्यक्ति को तंबाकू न खाने का उपदेश करना। 'पंजोखरा' नामक स्थान पर एक पंडित जिसका नाम लालचंद था और वो ऊंची तथाकथित ब्राह्मण जाति के अहंकार में फंसा हुआ था। उसने प्रचार करना शुरू कर दिया कि "एक ७-८ वर्ष का बालक अपने आप को 'गुरु' कहलाता है। अगर इसमें इतनी बड़ी शक्ति है तो इसको कहो कि वो 'गीता' के अर्थ करके बताए।" गुरु साहिब ने लालचंद को समझाया कि "अगर मैंने अर्थ कर भी दिए तो तेरे मन की संतुष्टि फिर भी नहीं होगी। अगर तूने गुरु नानक साहिब के दरबार की बख्शिशें देखनी हैं तो शहर में जो भी व्यक्ति मंदबुद्धि का हो, उसको ले आ, वो तेरे सभी प्रश्नों का उत्तर दे देगा।" पंडित लालचंद ने इसे अपना अपमान समझा और एक गूंगे व मूर्ख व्यक्ति, जिसका नाम 'छज्जू' था, को गुरु जी के पास ले आया। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने छज्जू पर कृपा-दृष्टि डाली। ऐसी कृपा हुई कि गूंगा छज्जू उच्च कोटि के ज्ञानवान पंडित की भांति 'गीता' के श्लोकों के अर्थ करने लगा। लोग चकित रह गए। अहंकारी पंडित लाला चंद ने गुरु साहिब से क्षमा मांगी। इससे गुरु-घर की शोभा और भी बढ़ गई।

गुरु जी जब दिल्ली पहुंचे तो राजा जै सिंघ की रानी ने गुरु जी की परख करने हेतु मन में इच्छा प्रकट की कि अगर ये गुरु जी अंतरयामी हैं तो मेरे महलों में आकर मेरी गोदी में बैठें। बहुत-सी और अमीर औरतों को भी अपने पास बिठा कर रानी ने गुरु जी को अपने पास बुला लिया। घट-घट की जानने वाले श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने देखा कि सभी औरतें एक जैसी ही बैठी हैं। गुरु जी मुस्कराते हुए रानी की गोदी में बैठ गए।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब निर्भय और निरवैर थे। आप जी दिल्ली में औरंगजेब की ओर से संदेश मिलने के बावजूद भी उसके पास न गए। आप जी ने वचन किया कि "औरंगजेब अत्याचार कर रहा है, हम ऐसे बादशाह के सामने नहीं जाएंगे।" औरंगजेब द्वारा भेजी हुई कीमती वस्तुएं भी गुरु जी ने वापिस भेज दीं।

दिल्ली में उन दिनों चेचक की भयानक बीमारी फैली हुई थी। गुरु जी ने छूत की इस

खतरनाक महामारी के रोगियों के इलाज के लिए कठोर परिश्रम किया, उनकी बहुत सेवा की। गुरु जी की आयु उस समय लगभग ७ साल ९ माह की थी, जब चेचक ने आप जी पर भी हमला बोल दिया। अपना अंतिम समय निकट जान कर गुरु जी ने राजा जै सिंह का महल छोड़ दिया और संगत समेत यमुना नदी (दिल्ली) के किनारे आ बसे। गुरु जी ने संगत को हुक्म दिया कि 'बाबा बकाले', जिसका भाव था, अगले 'गुरु' बकाला गांव में हैं और वे हमारे बाबा लगते हैं।" यह संकेत श्री गुरु तेग बहादर जी की ओर था। ३० मार्च, १६६४ ई को दिल्ली में यमुना नदी के किनारे गुरु जी ज्योति-जोत समा गए। इस समय यहां पर सुंदर गुरुद्वारा बाला साहिब सुशोभित है।

हर रोज अरदास में हम गुरु साहिब को सभी प्रकार के दुखों को नष्ट करने वाला कह कर उनकी आराधना करते हैं:

श्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिसु डिठै सभ दुख जाए ॥

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी

(पृष्ठ १७ का शेष)

प्राचीन किला, जिसके चारों तरफ निर्मित ३०-३५ फुट ऊंची सुरक्षा-दीवार एक दीर्घकाय पहरेदार के समान खड़ी थी, किन्तु फिर भी चप्पे-चप्पे पर भारी सैनिक जमाव था। यह क्रम काफी समय तक चलता रहा। फिर गुरु जी को दो साल तीन माह के अंतराल के कैद से रिहा करने का शाही आदेश तो हो गया किन्तु ग्वालियर के किले में पहले से ही बंदी बनाये गये सभी ५२ राजाओं, जो उम्र कैद की सजा काट रहे थे, को गुरु जी की अनुकम्पा और आग्रह से रिहा करना पड़ा। इसी कारण आपको 'बंदी छोड़ दाता' अर्थात् 'बंधन काटने वाले गुरु' के नाम से भी पुकारा जाता है। अब गुरु जी के नित्य दर्शनों एवं उपदेशामृतपान का सुअवसर समस्त को प्राप्त हो गया। गुरु जी जिस दिन रिहा होकर अमृतसर पहुंचे उस दिन संयोग से दीपावली का दिन ही था। अत: बड़े हर्षो-उलास से दीपक प्रज्वलित किये गये और खुशियां मनाई गईं। यह परंपरा बंदी छोड़ दिवस के रूप में कालांतर से निरंतर चली आ रही है।

गुरु जी ने अमृतसर में कौलसर और बिबेकसर सरोवरों का निर्माण कराया और हिमालय की तराई में कीरतपुर साहिब नाम से प्रचार-केन्द्र स्थापित किये। अपने समय में देश-धर्म की रक्षार्थ शाही मुगल सेनाओं के साथ चार बार युद्ध-क्षेत्र में गुरु जी का मुकाबला हुआ और चारों बार गुरु जी को विजय प्राप्त हुई।

अपनी सांसारिक यात्रा पूरी कर ३८ वर्ष तक गुरगद्दी पर रहते हुए ५० साल की आयु में ६ चेत, सं. १७०१ तदनुसार ३ मार्च सन् १६४४ को कीरतपुर साहिब में गुरु जी सदैव के लिए प्रभु-ज्योति में विलीन हो गये। मानवीय धर्म के प्रति गुरु जी की आस्था, निष्ठा, त्याग, बलिदान, सहनशीलता, सत्यता का अनुसरण कर आत्मविश्वास एवं दृढ़ संकल्प के साथ सत्य शाश्वत मूल्यों की रक्षा करना ही आधुनिक युग में गुरु जी का सच्चा एवं पवित्र स्मरण रहेगा।

भाई मनी सिंघ की शहादत

*-डॉ. नरेश**

सन् १७२६ में जकरिया खान पंजाब का गवर्नर बना। सात वर्ष तक वह सिक्खों की शक्ति के विनाश में निमग्न रहा। उसने जिहाद के नाम पर बलोचों, सैयदों, मुगलों, गूजरों, भट्टियों और पठानों को 'हैदरी परचम' के तले एकत्र भी कर लिया लेकिन वह हताश हो गया। सन् १७३३ में उसने सुबेग सिंघ के माध्यम से सिक्खों के साथ सुलह कर ली और सिक्खों को नवाबी देकर एक लाख रुपया मालियत की जागीर देना कबूल कर लिया। इस राजीनामे के अधीन सरदार कपूर सिंघ को नवाब का लकब प्राप्त हुआ।

सन् १७३८ में भाई मनी सिंघ श्री दरबार साहिब के मुख्य ग्रंथी थे। 'तरुण दल' की गतिविधियों से तंग आकर जकरिया खान ने दीवान लखपत राय की कमान में मुगल सेना भेजी, जिसने आकर अमृतसर को घेर लिया। दीवान ने सेना को आदेश दिया कि जो भी कोई श्रद्धालु किसी दिन-त्योहार पर अमृतसर आए उसे गिरफ्तार करके लाहौर भेज दिया जाए। भाई मनी सिंघ ने जकरिया खान से आग्रह किया कि दीवाली के अवसर पर अमृतसर आने वाली संगत के साथ वह इस प्रकार का व्यवहार न करे। इसके बदले में भाई साहिब ने चढ़ावे की राशि में से दस हजार रुपया जकरिया खान को देने की पेशकश की। जकरिया खान ने पेशकश स्वीकार कर ली लेकिन जैसे ही श्रद्धालुओं का आना शुरू हुआ, मुगल सेना ने उन पर आक्रमण करना आरंभ कर दिया। परिणामस्वरूप उस वर्ष दीवाली का समागम न हो सका। अत: अपेक्षित चढ़ावा भी न चढ़ा। जकरिया खान ने भाई मनी सिंघ को दस हजार रुपया वादे के अनुसार अदा न करने के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया।

भाई मनी सिंघ को इस्लाम कबूल करने के लिए कहा गया। स्पष्ट है कि भाई साहिब का यह स्वीकार करना असंभव था। ताव खाए हुए मुगलों के जल्लादों ने भाई साहिब के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इस प्रकार भाई मनी सिंघ जी ने शहादत पाकर शहीदों की शृंखला में एक नाम और शामिल कर दिया।

भाई साहिब के पारिवारिक वंशज भाट थे जो मूलत: काशी के रहने वाले थे, जिनको लाड़वा के राजा अजीत सिंघ ने एक गांव दान में दे दिया था। अत: भाटों का यह परिवार लाड़वा में बस गया। इसी परिवार के एक सदस्य सेवा सिंघ ने घर के बहीखातों में दर्ज तथ्यों के आधार पर भाई मनी सिंघ की जीवनी कविताबद्ध की परन्तु भट्टाक्षरी लिपि में लिखी होने के कारण चिरकाल तक यह प्रमाणिक जीवनी अनुपलब्ध रही। सन् १८६० में छज्जू सिंघ भाट नामक एक साहित्यानुरागी ने इसे गुरमुखी अक्षरों में परिवर्तित करके इस बहुमूल्य रचना को पाठकों के लिए सुलभ कर दिया। रचना के विषय में स्वयं रचनाकार का कहना है कि :

मनी सिंघ की गाथा जिम लिखी सुनी थी आई।
सेवा हरि इक भाट ने दित्ती सकल सुनाई।

**१६९, सेक्टर-१७ पंचकूला-१३४१०९*

बंद-बंद कटवाने वाले : भाई मनी सिंघ जी

*-श्रीमती शैल वर्मा**

भाई मनी सिंघ जी बचपन में आप अपने माता-पिता के साथ श्री अनंदपुर साहिब के दर्शन करने गये। कुछ दिन वहां रहने के बाद वापस होने लगे तो श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने इन्हें अपने पास रख लिया। इस समय आपकी आयु पांच वर्ष की थी। आप श्री गुरु गोबिंद राय जी के साथ खेला करते थे। गुरु-परिवार के साथ रहने का सौभाग्य भाई मनिया को प्राप्त हो गया। जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी गुरगद्दी पर बैठे तो भाई मनिया को लंगर के प्रबंध और देखभाल के लिये लगा दिया गया। ये लंगर का कार्य सुचारू रूप से करते थे। इसके साथ ही इनका मन लेखन-कार्य में अधिक व्यस्त रहता था। दशमेश पिता द्वारा साजे पांच प्यारों से तत्कालीन उच्च कोटि के कवियों में भाई मनी सिंघ का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। अमृत-पान कर वे 'भाई मनी सिंघ' कहलाए।

भाई मनी सिंघ जी का रुझान पढ़ने-लिखने में अधिक देखकर उन्हें लंगर के कार्य से अलग कर दिया गया और वे मुख्यतः गुरबाणी सिखाने का कार्य करने लगे। आप युद्ध-कला में भी निपुण रहे। १७०४ ई में मुगलों के साथ युद्ध हुआ। अनंदपुर साहिब का किला खाली करना पड़ा। उन्हें गुरु जी के महिलों को सुरक्षित, मुगलों के चंगुल से बचाते हुये दिल्ली पहुंचाना पड़ा। जब मुगलों से युद्ध समाप्त हुआ तो भाई मनी सिंघ जी ने गुरु जी के महिलों को लेकर तलवंडी साबो (बठिंडा) पहुंचे। कुछ दिन बाद माता सुंदरी जी ने भाई मनी सिंघ जी को श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर का ग्रंथी नियुक्त करके भेजा। भाई मनी सिंघ जी ने श्री हरिमंदर साहिब का प्रबंध बहुत सुचारू रूप से चलाया।

भाई मनी सिंघ जी ने श्री अमृतसर में रह कर कई रचनायें जैसे 'भगत रतनावली', 'गिआन रतनावली' आदि कीं, जो इस समय एक अमूल्य निधि और महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त आपने दसम ग्रंथ का संपादन भी आरंभ किया।

मुगलों के आंतक के कारण कुछ वर्षो से श्री अमृतसर में दीपावली का मेला नहीं लग पा रहा था। उन्होंने श्री अमृतसर में दीपावली के मेले का आयोजन करना चाहा। इसके लिये उन्होंने लाहौर के गवर्नर जकरिया खान को लिखा। ५०००/- रुपये का कर लेने की बात कह कर जकरिया खान ने मेले की स्वीकृति दे दी। भाई मनी सिंघ जी ने सिक्खों को श्री अमृतसर मेले में आने के लिये पत्र लिख भेज दिये। उधर जकरिया खान ने श्री अमृतसर की ओर अपनी सेना भेज दी। भाई मनी सिंघ जी ने मुगलों की नीयत की खोट समझ ली और लोगों को आने से मना कर दिया। परिणाम यह हुआ कि मेला नहीं लग पाया। भेटा कम हुयी। मुगलों ने तय किया हुआ कर मांगा। भाई मनी सिंघ ने इंकार कर दिया--"जब मेला लगा ही

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

**४८/८, सागर सदन, गांधी नगर, पुलिस चौकी के पीछे, बस्ती-२७२००१ फोन : ०५५४२-२८८५८२*

भाई मनी सिंघ : *तुरकां दा की हैसी गवाइआ?*

*-स. किरपाल सिंघ**

'बंसावलीनामा' में भाई केसर सिंघ छिब्बर ने बिलकुल सही लिखा है : भाई मनी सिंघ तुरकां दा की हैसी गवाइआ?

सिक्ख इतिहास को शहीदों का इतिहास भी कहा जाता है। सिक्ख इतिहास का संबंध केवल पंजाब से ही माना जाता है, पर इसने हिन्दोस्तान के इतिहास को बदलने में अपनी अहम भूमिका भी तय की है। अगर भारत में धर्म की आजादी की खातिर कोई जंग लड़ी गई तो वह पहले पंजाब से सिक्खों द्वारा ही लड़ी गई। श्री गुरु नानक देव जी के आगमन (१४६९ ई) से पहले लगभग चार सौ साल से भारत मुस्लिम हकूमतों का गुलाम बना रहा और सिक्ख धर्म की स्थापना के बाद तीन सौ साल मुगल हकूमत और लगभग दो सौ साल अंग्रेजों का गुलाम रहा। मुस्लिम आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम से लेकर मुगल बादशाह बहादुरशाह दूसरे के काल तक अगर हिन्दोस्तान में धर्म की आजादी के लिये कोई आवाज बुलंद हुई तो वह केवल पंजाब से, वह भी सिक्खों के पहले गुरु, गुरु नानक साहिब जी द्वारा : *"जे जीवै पति लथी जाइ ॥ सबु हरामु जेता किछु खाइ ॥"* का ऐलान करके। परंतु आवाज किसी विशेष धर्म या व्यक्ति के खिलाफ नहीं थी, बल्कि अन्याय, गुलामी और हकूमती अत्याचार के खिलाफ थी। इस आदर्श पर ही चलते हुये सिक्खों के पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी सन् १६०६ में शहीद हुये थे। इसी मर्यादा को निभाते हुये नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने अपना बलिदान दिया। इसके बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो अपना सारा परिवार, अपना वंश, अपनी सुख-सुविधायें सब कुर्बान कर दीं। फिर गुरु साहिबान के पद-चिन्हों पर चलते हुए और शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की अगुआई तले, हजारों-लाखों सिक्खों ने अपनी जान की कुर्बानी दी, पर धर्म नहीं छोड़ा।

जान पर खेलने के जो-जो कारनामे सिक्खों ने किये वह कोई दूसरा न कर सका। वक्त की हकूमतों ने उनको शहीद करने के अलग-अलग और नये-नये तरीके अपनाये, पर सिक्खों ने अपना संघर्ष नहीं छोड़ा।

अनगिनत सिक्ख शहीदों की कतार में एक नाम भाई मनी सिंघ जी का आता है, जिन्होंने ७४ साल की आयु** में अपने बंद-बंद कटवाये थे। भाई मनी सिंघ जी उन चुनिंदा सिक्खों में थे जिनको श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अनंदपुर साहिब से १७५५ वि: की वैसाखी के दिन अमृतसर जाने का आदेश दिया था। उनके साथ गुरु जी ने पांच सिक्ख*** भेजे--भाई भूपत सिंघ, भाई गुलजार सिंघ, भाई कोइर सिंघ, भाई दान सिंघ और भाई कीरत सिंघ। भाई मनी सिंघ जी ने अमृतसर आकर श्री हरिमंदर साहिब में सिक्ख मर्यादा को फिर से

**भूतपूर्व रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।*
***डॉ. रतन सिंघ जग्गी ९० साल लिखता है। (देखो--भाई मनी सिंघ : जीवन अते रचना)*
****भाई मनी सिंघ : जीवन अते रचना; डॉ. रतन सिंघ जग्गी के अनुसार*

प्रचलित किया जो पहले कभी मीणे-मसंदों की गतिविधियों से खंडित हो चुकी थी। इस बीच भाई मनी सिंघ जी अनंदपुर साहिब गुरु जी के दर्शनों व मार्गदर्शन के लिये भी जाते रहते थे। हमेशा की तरह सिक्ख संगत दूर-दूर से दीवाली और वैसाखी पर श्री अमृतसर के दर्शन-स्नान के लिये आती थी और अब भाई मनी सिंघ जी के आने पर तो इसमें पहले की तुलना से ज्यादा जोश और उल्लास पैदा हो गया था। इस समय हकूमत और सिक्खों के बीच तना-तनी और युद्ध के हालात भी बने हुये थे, जिनके चलते लाहौर के सूबेदार जकरिया खान ने सिक्खों के खिलाफ युद्ध छेड़ रखा था। उसने सिक्खों को अमृतसर के दर्शन-स्नान से भी रोकना शुरू कर दिया। उसकी गशती फौज ने हजारों सिक्खों को बेघर या कत्ल कर दिया था। इस खूनी दौर में हजारों की तादाद में सिक्ख अपनी जमीनें, घर-बार, धन-दौलत छोड़ कर जंगलों या पहाड़ों की तरफ चले गये थे। सिक्खों का असल देश माझा उजड़ चुका था। इन कठिन हालात के चलते हुये सिक्ख फिर भी दीवाली और वैसाखी पर श्री अमृतसर के दर्शन-स्नान को उमड़ पड़ते। जो पकड़े जाते वे शहीद हो जाते।

ऐसे कठिन हालात के चलते भाई मनी सिंघ जी ने १७३८ ई को दीवाली पर्व के मौके पर खालसे का इकट्ठ करवाने के लिये जकरिया खान से इजाजत मांगी। जकरिया खान ने ५००० रुपयों के बदले इकट्ठ करने की इजाजत दे दी, पर साथ ही अपनी फौज को इस मौके पर सिक्खों के ऊपर हमला करके, उनको मार मुकाने का हुक्म भी दे दिया। जब इस बात की भनक भाई मनी सिंघ जी को लगी तब उन्होंने जगह-जगह अपने आदमी भेजकर खालसे को उस दीवाली के मौके पर अमृतसर आने से मना कर दिया। फिर भी दीवाली के दिन थोड़ी-बहुत गिनती में खालसा श्री अमृतसर में जुड़ बैठा। भाई मनी सिंघ जी को मुगल सेना पकड़कर लाहौर ले गई। भाई मनी सिंघ जी को मुसलमान बनने या अपने शरीर के बंद-बंद कटवाने को कहा गया। भाई मनी सिंघ जी ने बंद-बंद कटवाना मंजूर किया। पहले उनकी उंगलियों के पोटे, फिर हथेली, फिर कलाई, फिर कुहनी, फिर बाजू और इस तरह सारा शरीर टुकड़े-टुकड़े करके शहीद कर दिया। उनकी शहीदी का वृत्तांत पढ़-सुन कर हरेक हृदय पीड़ित होकर बोल उठेगा, "क्या बिगाड़ा था भाई मनी सिंघ जी ने तुर्कों का?"

. . . भाई मनी सिंघ जी *(पृष्ठ ३१ का शेष)*

नहीं तो कर कैसा?" मुगलों ने भाई मनी सिंघ जी को गिरफ्तार करके उनका बंद-बंद काट देने का आदेश दिया। भाई मनी सिंघ जी ने गुरबाणी पढ़ते-पढ़ते अपना बंद-बंद कटवा कर शहीदी प्राप्त की।

इतनी महान कुर्बानी देने का साहस भाई मनी सिंघ जैसे शूरवीर ही कर सकते हैं। एक विद्वान, बहादुर, साहसी और नेक चाल-चलन के सिद्धांत पर चलने वाला व्यक्ति ने, इतनी दर्दनाक स्थिति को झेला यह सोच कर आज भी हम सबका खून खौल उठता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री आदि बीड़ साहिब में नवम पातशाह की बाणी शामिल करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पूर्ण बाणी वाली बीड़ भाई मनी सिंघ से लिखवाई जो सिक्ख धर्म में 'दमदमे वाली बीड़' के नाम से जानी जाती है।

बाबा बंदा सिंघ बहादर

*–श्री संजय बाजपेयी रोहितास**

जब मन पर छाया अंधियारा
मैंने वाहिगुरु को पुकारा
तभी अचानक हुआ प्रकाश
श्री गुरु नानक आये पास
साथ में उनके नौ सहयोगी
और साथ एक सिक्ख महायोगी
श्री गुरु गोबिंद सिंघ का गौरव
शिष्य बनाकर दी प्रेम-छांव
बाबा बंदा सिंघ बहादर
सभी लोग उन्हें देते आदर
दास पातशाहों का लाडला
वीर योद्धा वह मन का भला
धनुष-प्रत्यंचा-तीर का वार
कभी किया हिरणी का शिकार
जब हिरणी के पेट को चीरा
हिरणी का शिशु तड़प कर मरा
इस घटना से आया मोड़
वह विराग में निकला घर छोड़
मन में गुरु-दर्शन की चाह
चलता रहा कठिन वो राह
जानकीदास, रामदास, औघड़नाथ
अतृप्त प्यास अब भी थी साथ
झोली में अनेक रिद्धियां-सिद्धियां
सब एक साथ हों कैसे बयां?
एक पलंग उसने बनवाया
साधु-संत जो नजदीक आया
उसे पलंग पर सादर बिठाया
फिर तंत्र-शक्ति से उसे गिराया
बजा के ताली करे अट्टहास
साधु-संत का करे उपहास
उनको लोग समझते दंभी
मन में अहंकार जलकुंभी
अत: साधु का करे उपहास
रिद्धि-सिद्धि दुरुपयोग परिहास
लेकिन बाबा बंदा सिंघ बहादर
योग्य पात्र को देते आदर
गुरु वह हो जो शिष्य से ऊंचा
तब सन् सत्रह सौ आठ आ पहुंचा
लेकर संग श्री गुरु गोबिंद सिंघ
जो अधर्मियों से लड़ते जंग
दशम पातशाह पलंग बिराजे
जिनके आगे झुकें महाराजे
तब वह पलंग भला क्यों उलटे?
बाबा बंदा सिंघ तब पलटे
श्री गुरु गोबिंद सिंघ के चरण
गुरु जी मुझको लो निज शरण
दशम पातशाह साहिब दयावान
अधरों पर आई मुस्कान
शिष्य बनाकर दी पहचान
श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान
बंदा सिंघ नाम दे अमृत छकाया
फिर योद्धा रूप में उसे सजाया
धनुष, पांच तीर, अलाही तरकश
दशम पातशाह साहिब जी खुश
प्रिय गुरु साहिब प्रेम प्रमाण
शिष्य को दे दी निज कृपाण
उन्हें साथ में दिये पांच प्यारे
कहा--"सिक्ख पंथ तेरे सहारे
अब तू लड़े मेरी लड़ाई, कर अधर्म पर तू चढ़ाई
तू उखाड़ अत्याचार के डेरे

***C/o** जनाब हुसैनी मियां साहब, स्टेशन रोड, कछौना (बालमाऊ), जिला हरदोई (उ. प्र.)-२४११२६*

श्री वाहिगुरु जी अंग-संग तेरे
यही है वाहिगुरु का हुक्म
जालिम सलतनत कर दे खत्म
चौपट कर दे गोरखधंधे
ईंट से ईंट बजा दे बंदे।"
बंदा सिंघ बहादर चला
शुरू हुआ फतह-सिलसिला
शाहबाद, ठसका, मुसतफाबाद
सढौरा, समाणा में मुगल बर्बाद
श्री वाहिगुरु की ऊंची पदवी
मई सन् सत्रह सौ दस ईसवी
सरहिंद फतह का आया अवसर
वजीर खां गया सिंघों से घिर
चपड़चिड़ी के मैदान में
क्यों कृपाण रहती अब म्यान में?
दहशतगर्दों पर छाई दहशत
मौत से अब कैसे हो बचत?
"बंदा आया, बंदा आया"
वजीर खां को धूल में मिलाया
वाहिगुरु का चल गया शस्त्र
सौंप दिये मुगलों ने अस्त्र
खालसा सैनिक जमकर लड़े
बंदा सिंघ ने किया सरहिंद फतह
नींव पड़ी प्रथम सिक्ख सलतनत की
सबकी बुद्धि जहां गुरमति की
दे श्री वाहिगुरु को आदर
बाबा बंदा सिंघ बहादर
अरमान पूर्ण हो गया सिक्ख का
गुरु के नाम का चल गया सिक्का
लोहगढ़ स्थापित राजधानी
मोड़ अब लेती है कहानी
सिक्ख राज के आठ वर्ष बीते
मुगल लोग कुढ़-कुढ़ कर रहते
मुगल बादशाह फरुख्सियर गद्दी पर
भेज दिया लाखों का लश्कर
बंदा सिंघ बोले थे हंस कर
"मानो सदा वाहिगुरु का भाणा
एक दिन तो है सबको जाना
वाहिगुरु की महान गुरमति
वीर का सौभाग्य होती वीरगति।"
हुई थीं तब कई एक लड़ाई
खालसे पाते रहे बढ़ाई
फरुख्सियर बादशाह बिलबिलाया
तब अबदुसमद का लश्कर आया
शाही सेना सिंघों से चिढ़ी
घेर ली गुरदास नंगल गढ़ी
जाना बंद हुआ रसद और पानी
करुण मोड़ ले रही कहानी
गढ़ी में सिंघ थे भूखे-प्यासे
शायद वाहिगुरु की आज्ञा से
बीता आठ माह का समय
सबके तन-मन थे वाहिगुरुमय
अंत में गिरफ्तार हुये खालसा
मुगल करें क्रूरता का जलसा
दिल्ली की ओर चला काफिला
देख सभी का दिल था दहला
सिंघ बंधे पड़े छकड़ों में
बंदा सिंघ थे कैद पिंजरे में
पांच मार्च सत्रह सौ सोलह
मुगलों का मन बहुत था मैला
जंजीरों से बंधे पैर-हाथ
सौ-सौ सिंघ कत्ल हुये एक साथ
सन् सत्रह सौ सोलह, नौ जून
चारों तरफ बह रहा खून
हद कर दी थी उन जालिमों ने
अकथनीय क्रूरता नमूने
बाबा बंदा सिंघ बलिदान
सिक्ख वो सर्वश्रेष्ठ और महान
हम अर्पित करते श्रद्धांजलि
महावीर को भाव-प्रेमांजलि
हम सब दें स्नेह और आदर
धन्य-धन्य बंदा सिंघ बहादर।

सिक्ख धर्म और भक्ति

*-स. रणवीर सिंघ**

धर्मों के दायरे में भक्ति को ऊंचा स्थान और सम्मान दिया गया है। यह अलग बात है कि कहीं भक्ति को 'ज्ञान-प्रधान' तो कहीं 'कर्म-प्रधान' माना गया है, परन्तु सब ने एक स्वर से यह बात स्वीकारी है कि उस परम तत्व को बिना साधना के प्राप्त नहीं किया जा सकता और उस साधना या साधन को ही भक्ति कहते हैं। फिर सिक्ख धर्म तो है ही भक्ति-प्रधान। इसमें उस परम तत्व को 'वाहिगुरु' या 'अकाल पुरख' कहते हैं। इसे दो स्वरूपों में वर्णित किया गया है, जो मन और वाणी अथवा बोल से परे अगोचर है। उसे 'निर्गुण' और दूसरा स्वरूप सृष्टि के सम्बंध में है, जिसे 'सगुण' या 'नाम रूप' से वर्णन किया गया है।

जब इस सृष्टि की रचना नहीं हुई थी तब अकाल पुरख का नाम 'निर्गुण' था और जब उसने रचना करके प्रकाश किया तब वह 'सगुण' होकर बरतने लगा। इन्हीं दो स्वरूपों का वृत्त "आसा की वार" की पहली पउड़ी में किया गया है:

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥
(पन्ना ४६३)

सिक्ख मत में मुख्यता निराकार उपासना को विशेष मान्यता दी गई है, इसके साथ नाम-सिमरन और नाम-कीर्तन को भी बड़ा उच्च स्थान प्रदान किया गया है जो है तो निराकार की ही उपमा लेकिन बाहरी रूप से यह ढंग सगुण भक्ति की भी थोड़ी झलक देता है।

दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु की पदवी से सम्मानित करने के पश्चात गुरबाणी को गुरु स्वीकार किया गया है। भाई गुरदास जी स्पष्ट रूप से फरमाते हैं--*"गुर मूरति गुर सबदु है साधसंगति विचि परगटी आइआ।"* भाई नंद लाल ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विचारों को प्रकट करते हुये लिखा है :

तीन रूप है मोह के सुनहु नंद! चित लाय।
निर्गुण, सगुण, गुरशबद, कहहु तोहि समझाय।
जो सिक्ख गुरु दर्शन की चाहि, दर्शन करे ग्रंथ जी आहि।
जो मुझ बचन सुनन की चाइ, ग्रंथ विचार सुनहु चित लाय।
मेरा रूप ग्रंथ जी जान, इसमें भेद न रंचक मान।

इस प्रकार सिक्ख मत में निर्गुण (सत, रज, तम) से अलिप्त हो, सगुण में दस गुरु साहिबान का नाम व स्वरूप दर्शाया और गुर-शबद को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप में मानव के जीवन को सफल करने का मूल-मंत्र बताते हुये श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आशीर्वाद देते हुये वचन दे दिया :

गुरबाणी गावह भाई ॥
ओह सफल सदा सुखदाई ॥ (पन्ना ६२८)

अर्थात् हे भाई! गुरबाणी को गाओ, गुनगुनाओ, इसका आनंद लेकर देखो यह सदा सुखदायी है, इसलिये :

नित उठ गावहु प्रभ की बाणी ॥
आठ पहर हरि सिमरहु प्राणी ॥ (पन्ना १३४०)

**मु. पो. मान्दी, तहसील नारनौल, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)*

इस सिमरन नामक भक्ति का परमात्मा, निर्गुणात्मक और सगुणात्मक बाणी रूप में सर्वदा सर्वत्र एक है, सर्वव्यापक है, यह भक्ति रूपी ज्योति ध्रुव तारे की तरह अटल है। यह *"आदि सचु जुगादि सचु है ॥ भी सचु नानक होसी भी सचु ॥"* है। उसका नाम सदा सत्य है, वह स्थिर है और एक रस है। वह काल से परे है, अजन्मा है, स्वयंभू है, महान दयालु है। हे मनुष्य! तू उसके नाम का जाप कर। यह सबसे उत्तम और निर्मल कर्म है। इसके लिये किसी विशेष प्रकार की वेषभूषा की आवश्यकता नहीं और न संसार त्यागने, न वन जाने की जरूरत है:

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥
(पन्ना ६८४)

उस अकाल पुरख का दास बनकर गृहस्थ में रहकर ही उसे प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि *"घर ही महि अंम्रितु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ ॥"* यही कसौटी है उस अकाल पुरख को प्राप्त करने की। बाणी की पालना करना प्रत्येक सिक्ख का धर्म है, यही उसकी भक्ति है।

सिक्ख मत 'सिमरन' को महत्व देता है, क्योंकि सब गुरु साहिबान ने इस 'नाम' को खजाना कहा है और भक्तों के लिये इसे पूंजी माना है। इसमें तल्लीन होना ही जाप है।

सिक्ख मत व्रत, उपवास, कर्मकांड, कोई बंधना नहीं मानता बल्कि हंसते, खेलते, खाते, पीते नाम-सिमरन करते हुए मुक्त-पद का पात्र बनता है :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ (पन्ना ५२२)

कविता

बंदा गुरु का

बंदा गुरु का बाबा बंदा सिंघ बहादर।
पाकर गुरदेव का फरमान
त्यागीत्व का किया त्याग
मन से योद्धा हुआ उजागर।
बंदा गुरु का . . .।
गुरु-विचार को अर्पित सभहूं
गुरदेव का हुक्म सकल बजाया
मन-चित्त को कर एकाग्र।
बंदा गुरु का . . .।
बना लोक-राज संग साधक
जमींदारी तोड़कर जागीरदारी
लोकाई को बांटा सुख-सागर।
बंदा गुरु का . . .।
जालिम राज की ईंट से ईंट बजाई
परचम केसरिया लहराया
चढ़दी कला जय-जयकार बुलाकर।
बंदा गुरु का . . .।
इतिहास का सहंसर सुरख पन्ना
लाल-ओ-लाल लहू से लबरेज
नाम रौशन हुए रत्नागर।
बंदा गुरु का . . .।
बिन डोले, डरे कुर्बान हुए
सब्र से जुल्म-जब्र सहा
नहीं छूटने दी सिदकी गागर।
बंदा गुरु का . . .।
उनकी कुर्बानी पे
सद-सद कुर्बान जाऊं
मनोजगत के संग सआदर।
बंदा गुरु का बाबा बंदा सिंघ बहादर।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तन वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर। मो: ९४१७१-७५८४६

गुरबाणी राग परिचय : २९

रागु जैजावंती

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की रागमयी बाणी का समापन राग जैजावंती के चार दुपदे शबदों से सम्पन्न होता है। इन शबदों का अंकन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के द्वारा श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी सम्मिलित करते समय किया गया।

जैजावंती खमाच ठाठ का सम्पूर्ण राग है। इसका वादी स्वर ऋषभ और संवादी स्वर पंचम है। गाने का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसके आरोह में दो गंधार और निखाद स्वर शुद्ध लगते हैं और अवरोह में गंधार तथा निखाद स्वर कोमल लगते हैं। जैजावंती राग सोरठि राग का अंग है तथा सोरठि, गोंड और बिलावल के मिलन से बनता है।

राग जैजावंती की बाणी के अंकन के बाद श्री गुरु ग्रंथ साहिब के राग-संयोजन पर विचार करें तो स्पष्ट होता है कि पूर्वार्द्ध के रागों के क्रम के अंत में बैराड़ी राग है जिसमें श्री गुरु रामदास जी के द्वारा मन को हरि-जस गायन करने के छः दुपदे हैं, जिनका स्वर परामर्श प्रधान है। अंतिम शबद श्री गुरु अरजन देव जी का है जिसमें *"सरब सूख हरि नामि वडाई"* का सुखद संदेश है। राग बैराड़ी एक तरह से राग टोडी का पूरक है। इस पर गुरु-मंत्र का संक्षिप्त रूप अंकित है।

राग जैजावंती का स्वर प्रखर और चेतावनीपूर्ण है। राग प्रभाती के बाद इन शबदों को पूर्ण गुरु-मंत्र के अंकन के बाद दिया गया है। शबदों की पंक्तियों में लय और तुकांत की विशेष संयोजना है। पहले दो शबदों में पुनरुक्ति के द्वारा कथन की पुष्टि है :

--रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥
--रामु भजु रामु भजु जनमु सिरातु है ॥
(पन्ना १३५२)

प्रथम शबद में जीवन की क्षणभंगुरता का चित्रण है। दूसरे शबद में संबोधन के बाद पंक्ति के अंदर तुकांत द्वारा संदेश की संवेदना व्यक्त की गई है :

कहउ कहा बार बार समझत नह किउ गवार ॥
बिनसत नह लगै बार ओरे सम गातु है ॥१॥रहाउ॥
सगल भरम डारि देहि गोबिंद को नामु लेहि ॥
अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥
बिखिआ बिखु जिउ बिसरि प्रभु कौ जसु हीए धारि ॥
नानक जन कहि पुकारि अउसरु बिहातु है ॥
(पन्ना १३५२)

हित-अनहित न पहचानने वाला व्यक्ति गंवार है जो बार-बार कहने पर भी मानता नहीं! 'बार-बार' अनुप्रांस अलंकार है, विनाश होने में देर नहीं लगेगी। इसमें 'बार' में यमक अलंकार है। जीवन की ओले से तुलना रूपक है।

चौथे शबद में गवार के स्थान पर काल के प्रति लापरवाही के कारण जीव को 'अजान' कहा गया है। वह इस क्षर नाशवान शरीर को स्थिर मान रहा है। हे लज्जा रहित मूर्ख! हरि का नाम क्यों नहीं लेता? मन का अभिमान छोड़कर प्रभु-भक्ति को हृदय में धारण कर तथा इस संसार में सुशोभित हो :

बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाजु रे ॥

**C-127, Guru Teg Bahadar Nagar, Allahabad-211016*

निसि दिनु सुनि कै पुरान समझत नह रे अजान ॥ कालु तउ पहूचिओ आनि कहा जैहै भाजि रे ॥१॥रहाउ॥
असथिरु जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥ . . .
राम भगति हीए आनि छाडि दे तै मन को मानु ॥ नानक जन इह बखानि जग महि बिराजु रे ॥
(पन्ना १३५३)

कविता

सिक्ख

सूरत-ओ-सीरत[१] है रबी, जलवा-ए-दीदार सिक्ख।
सतिगुरु की शान-ओ-शौकत[२] का, आलम-बरदार[३] सिक्ख।
मिस्ले[४]-परवाना फिदा है, सति श्री अकाल पर,
वाहिगुरु के जाप से है, रात-दिन सरशार[५] सिक्ख।
धर्म की फुलवाड़ियों पर, सर कटाना सहल[६] है,
सींचते हैं खून से ईमान का, गुलजार सिक्ख।
शरण जो आएं, उनके वास्ते ये ढाल हैं,
जुल्म और जालिम के सर पर, हैं मगर तलवार सिक्ख।
रश्क[७] के काबिल है इनकी आन भी और शान भी,
बे-खिजा[८] है बागे-आलम[९] में, शजर[१०] फलदार सिक्ख।
ग्रंथ साहिब राहबरे-कामिल[११] है, इनका सतिगुरु,
जिस 'पे' तन मन से हैं कुर्बा, हर घड़ी हर बार सिक्ख।
हो भला सबका, गुरु नानक के सदके, सुबह-ओ-शाम,
इस तरह अरदास करते हैं, सभी सरदार सिक्ख।
शेर की मर्दानगी, जाहिर है इनके नाम से,
मर्दे-मैदां सिंघ हैं, भारत के बरखुरदार सिक्ख।
आज ऊंचा सर है इनकी जात से पंजाब का,
हैं बहादुर खालसा सरदार, नेक अतवार[१२] सिक्ख।
हिंदुओं को हौंसले हैं वक्ते-मुश्किल किस कदर,
नाखुदा[१३] हैं डूबते बेड़ों के, आखिरकार सिक्ख। . . .
धन्न गुरु नानक के सदके खालसा कुलबीर हैं,
जां-निसारी[१४] के लिए, हर वक्त हैं तैयार सिक्ख।
ऐ 'कमर'! मैं भी सुना करता हूं सतिगुरु का कलाम[१५],
खूबी-ए[१६]-किस्मत से मिल जाते हैं, जब दो-चार सिक्ख (हुब्बे-वतन से)

१) चाल-चलन २) सिक्ख के दीदार का जलवा ३) झंडा उठाने वाले ४) परवाने की तरह ५) मस्त ६) आसान ७) ईर्ष्या ८) बिना पतझड़ के ९) संसार रूपी बाग में १०) दरख्त ११) पूर्ण मार्गदर्शक १२) चाल-चलन-चरित्र १३) खेवनहार १४) जान देने के लिए १५) गुरबाणी १६) सौभाग्य से।

मूल लेखक : दीवान पिंडी दास 'कमर' (स्व.)
लिपियांतर : स. हरमहिंदर सिंघ 'दीवाना', ५५१-झ/४३, राम नगर, आलमबाग, लखनऊ-२२६००५

गुरबाणी चिंतनधारा : ४५

अनंदु साहिब की विचार व्याख्या

-डॉ. मनजीत कौर*

बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥
पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥
इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥
गुर परसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥
कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए ॥८॥
(पन्ना ९१७)

अनंदु साहिब की आठवीं पउडी में श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि हे वाहिगुरु जी! जिस मनुष्य को आप आत्मिक आनंद की बख्शिश करते हो वही इस अमूल्य दात को प्राप्त कर सकता है। आपकी रहमत के बिना माया में भ्रमित हुए जीव दीन-हीन दशा में कुछ भी प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं। अनेकों जीव माया के भटकाव के कारण दसों दिशाओं में ही भटकते रहते हैं और कई भाग्यशाली जीवों को आप अपने नाम की दात (अपने चरणों की प्रीति) बख्श कर उनका जन्म सार्थक कर देते हो। इसी प्रकार सतिगुरु की कृपा से जिन्हें आपका हुक्म प्यारा लगने लगता है उनका मन निर्मल हो जाता है और जिन्हें तेरी रजा मीठी लगती है उसकी बदौलत ही उनका हृदय पवित्र होता है तथा वही आत्मिक आनंद प्राप्त करते हैं।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि हे वाहिगुरु जी! जिस किसी को भी आप आत्मिक आनंद की दात बख्शते हैं वही इसको प्राप्त करता है।

वस्तुत: जिस प्राणी को अकाल पुरख अपनी भक्ति की दात बख्शता है वही आत्मिक आनंद की अवस्था प्राप्त करने में सफल होता है। तुम्हारी रहमत के बिना जीव इस अमोलक दात से वंचित रहता है। अनेकों जीव माया के जाल में फंस कर अपने उद्देश्य से भटक जाते हैं, जैसे माया में भटका इंसान किसी के कहने में आकर एक केन्द्र-बिन्दु से उठता है, कुछ मील का रास्ता तय करता है, मन को तसल्ली नहीं होती, फिर वापिस आ जाता है; जैसे किसी ने कहा कि व्रत रखने से, मौन धारण करने से, हठयोग की क्रियाओं से, तीर्थ-स्नान से या किन्हीं और साधनों से यह कार्य सिद्ध हो जायेगा, लेकिन मन की तसल्ली नहीं होती और इस तरह सारा जीवन भटकाव में ही बीत जाता है और मनुष्य अपनी मंजिल प्राप्त करने से चूक जाता है। गुरबाणी का फरमान है :

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ (पन्ना १२)

जिस किसी पर कृपा-दृष्टि करके अकाल पुरख वाहिगुरु अपने नाम की दात बख्श कर, गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलाने की समर्थता बख्शता है वही जीव उस मालिक की रजा (हुक्म) को मीठा करके मानते हैं और सदैव आनंद में रहते हैं।

आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४ मो: ९३१४६-०९२९३

करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥
तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥
हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥९॥

श्री गुरु अमरदास जी अनंदु साहिब की नौवीं पउड़ी में संत-जनों को प्रेमपूर्वक विनती करते हैं कि हे प्यारे संत-जनो! आओ हम सब मिल कर अनंत गुणों के मालिक अकाल पुरख वाहिगुरु की सिफत-सलाह करें। उस अकथनीय प्रभु की कहानियां कहें अर्थात् उस परमेश्वर के गुण सुनें और सुनायें जिसके गुणों का कोई अंत नहीं पाया जा सकता। अगर आप यह प्रश्न करें कि उस प्रभु परमेश्वर को कैसे पाया जा सकता है, तो इस प्रश्न का सहज उत्तर गुरबाणी आशयानुसार यही है कि अपना तन-मन-धन सर्वस्व गुरु के चरणों में समर्पित कर दो, अगर इस युक्ति से गुरु का हुक्म मन में अच्छा लगने लगे तो गुरु के हुक्म की कमाई करता हुआ मनुष्य प्रभु को पा लेने में समर्थ हो जायेगा।

हे संत-जनो! गुरु के हुक्म को शिरोधार्य करो तथा सदा कायम रहने वाले प्रभु का गुणगान करो। तीसरे पातशाह विनती करते हैं कि हे संत-जनो, सुनो! उस प्रभु की प्राप्ति तथा आत्मिक आनंद प्राप्त करने का एक ही मार्ग है कि प्रभु की स्तुति सदैव करते रहो, जैसा कि गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है :

हरि कीआ कथा कहाणीआ गुरि मीति सुणाईआ ॥
(पन्ना ७२५)

जहां *"बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत करेनि"* की शिक्षा दी गई है, जहां अनुकरण योग्य बड़े बुजुर्गों की गाथाएं सुनकर पूत को सपूत एवं संस्कारी बनाया जा सकता है तब विचारणीय पहलू है कि सर्वगुण, सर्वकला समर्थ प्रभु की सिफत-सलाह भी जीव को गुणों से भरपूर कर उस परमेश्वर जैसा ही बना देगी। जरूरत है तो बस गुरु-दर्शाए मार्ग पर चल कर अपने कर्त्ता-भाव को दरकिनार करके केवल इस मन को ईश्वर-बंदगी का अभ्यासी बनाने की जिसकी बदौलत मन सदैव आनंद से परिपूर्ण रहे। यही है आत्मिक आनंद और यही है उस ईश्वर की प्राप्ति।

ऐ मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥
चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ ॥
एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ ॥
माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाइआ ॥
कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥
कहै नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ॥१०॥

श्री गुरु अमरदास जी उपरोक्त पउड़ी में मन की चंचलता को स्पष्ट करते हुए निरंतर चालाकियों से दूर रह कर उस परवरदिगार की आराधना को प्रेरित करते हुए फरमान करते हैं कि हे अति चंचल मन! (ध्यानपूर्वक सुन) चतुराई से किसी ने उस परमेश्वर को नहीं पाया (और न ही आने वाले समय में कोई पा सकेगा)। हे मन! सुन! चालाकियां करके किसी ने भी प्रभु-प्राप्ति का आनंद प्राप्त नहीं किया।

यह माया जीव को अपने मोहपाश में बांध कर जीव के आत्मिक गुणों को नष्ट कर देती है। माया ने जीव को भ्रम-भुलेखे में डाल कर, सांसारिक पदार्थों की मिठास में गलतान कर कुमार्गी बना दिया है। यह मोहिनी माया परमात्मा की ही रचना है। उसी परमेश्वर ने इस महाठगिनी माया को पैदा किया है और इसके मोह-जाल में स्वयं ईश्वर ने ही सब जीवों को डाल रखा है। जीव में इतनी समर्थता नहीं कि वो इसके प्रभाव से स्वयं बच सके।

अत: हे मन! स्वयं को माया पर कुर्बान करने की बजाय उस परमेश्वर पर कुर्बान करो ताकि माया के प्रभाव से बचा जा सके। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि हे मेरे चंचल मन! सियानपों अथवा चतुराइयों से किसी ने भी प्रभु-मिलाप का आत्मिक आनंद प्राप्त नहीं किया।

आओ! इस तथ्य को समझने का यत्न करें। एक मां अपने अबोध बच्चे का हर पल ख्याल रखती है, क्योंकि उसमें कोई चालाकी नहीं, दुनियादारी की भी समझ नहीं, वह तो अपना भला-बुरा भी नहीं समझता, वह तो आग के अंगारे को तथा सांप को भी खिलौना समझ कर हाथ में पकड़ लेगा। इसलिए मां हर क्षण अपने बच्चे का पूरी एकाग्रता से ध्यान रखती है कि कोई जीव या पदार्थ उसे किसी तरह का नुकसान न पहुंचाए। जैसे ही उसे दुनियादारी की समझ आ जाती है तो मां भी बच्चे की ओर से थोड़ी निश्चिंत हो जाती है, ठीक वैसे ही परमात्मा भी चालाकियां करने वालों की ओर से निश्चिंत हो जाता है, लेकिन जो चतुराइयों से दूर भोले-भाव में केवल ईश्वर के भरोसे हैं उनका हर पल ध्यान रखता है, उन्हें हर मुसीबत से आप बचा कर रखता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी यही भाव दृढ़ करवाया गया है। जपु जी साहिब में गुरु नानक साहिब जी का पावन संदेश है :

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥
(पन्ना १)

भक्त कबीर जी की बाणी में भी इसी भाव के दर्शन होते हैं :

किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥
जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥
रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥
चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ . . .
कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥
भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥ (पन्ना ३२४)

अत: स्पष्ट है कि चतुराइयों से सच्चा सुख नहीं मिल सकता।

Quantity की जगह Quality पर ज्यादा ध्यान दिया जाए!

'गुरमति ज्ञान' की लोकप्रियता का निरंतर बढ़ रहा ग्राफ 'गुरमति ज्ञान' के लेखक भाइयों-बहिनों के परिश्रम का ही फल है। हम अपने कुछ लेखक भाइयों-बहिनों से एक छोटी-सी विनती करते हैं कि वे अपनी रचनाओं में नवीनता का तत्व न गायब होने दें। तथ्यों पर आधारित, मौलिक तथा अप्रकाशित रचनाएं पत्रिका के विकास का 'इंजन' हुआ करती हैं तथा समाज में नई चेतना पैदा करती हैं। पूर्व प्रकाशित किसी रचना को ही सामने रखकर नई रचना लिख देना केवल पाठकों को ही निराश नहीं करता बल्कि ऐसा करने से तो पाठक वर्ग के मन-मस्तिष्क में उस लेखक के प्रति सम्मान की न्यूनता भी होने लगती है। कृप्या मात्रा (Quantity) की जगह गुणों (Quality) पर ज्यादा ध्यान दिया जाए।

-संपादक।

गुरु-गाथा : २१

आशीष की करामात

*-डॉ अमृत कौर**

श्री गुरु अरजन देव जी के महिल माता गंगा जी उदास हैं। चौदह वर्ष हो गए उनकी शादी हुए। पति के रूप में संत आत्मा महान पुरुष पंचम गुरु जी की अर्द्धांगिनी बनने का उन्हें सौभाग्य तो प्राप्त हुआ है, परन्तु शादी को इतना समय बीत जाने पर भी वे संतान-सुख से वंचित हैं। गुरु-घर की सेवा में पंगत और संगत की सेवा और देखभाल में समय कैसे पंख लगाकर उड़ गया कुछ पता ही न चला। इधर कुछ दिनों से सूनी गोद, बच्चे की किलकारियों से रहित घर उन्हें काटने को दौड़ता है। शादी के बाद मां बनने की तीव्र इच्छा प्रत्येक नारी को होती है। मां बनकर वह पूर्णता को प्राप्त करती है। मातृत्व में उसका सच्चा सुख छिपा है। जब दस-पंद्रह वर्ष तक संतान न हो तो सभी ओर से उंगलियां उठने लगती हैं।

एक दिन प्रिथी चंद की पत्नी करमों ने माता गंगा जी अपने व्यंग्य-बाणों से इतना आहत कर दिया कि उनकी आंखों से आसुंओं की धारा बह निकली। उन्होंने अपने मन की व्यथा अपने पति गुरदेव श्री गुरु अरजन देव जी को बताई। गुरु जी का उत्तर था, "संतान की बख्शिश अकाल पुरख करता है। आप उसकी आराधना में संलग्न रहो और मानव-सेवा में अपना समय व्यतीत करो। प्रभु आपकी प्रार्थना अवश्य सुनेंगे। लोगों के व्यंग्य-बाणों की ओर ध्यान मत दो।"

"आप तो संसार के दुखों को दूर करने वाले हैं। मेरे जीवन के इस अभाव की पूर्ति के लिए भी प्रभु के आगे अरदास कीजिए।"

गुरदेव ने अपने महिल माता गंगा जी को समझाते हुए कहा कि "शहर के बाहर नौ मील की दूरी पर गांव झबाल के समीप बाबा बुड्ढा जी ब्रह्मज्ञानी की बीड़ है। वे कथनी और करनी के पूरे हैं, ब्रह्मज्ञानी हैं। उन्हें गुरु नानक साहिब जी का आशीर्वाद प्राप्त है। उनकी शरण में जाओ। उनके लिए लंगर पका कर ले जाओ। आपकी सेवा-भावना से प्रसन्न होकर वे अवश्य प्रभु से आपकी मनोकामना की पूर्ति के लिए प्रार्थना करेंगे।"

माता गंगा जी ने भांति-भांति के व्यंजन बनवा कर लंगर तैयार करवाया। अपनी सेवादारनियों को साथ लेकर शानो-शौकत के साथ बीड़ साहिब में पहुंचे। दूर से धूल उड़ती देखकर बाबा बुड्ढा जी ने सेवादारों से पूछा, "इतनी धूल क्यों उड़ रही है? यह कौन-सी फौज चढ़कर आ रही है?" सेवादारों ने उत्तर दिया, "श्री गुरु अरजन देव जी के महिल (सुपत्नी माता गंगा जी) संगत के साथ आ रही हैं।" बाबा बुड्ढा जी के मुख से निकला, "गुरु-घर में ऐसी भी क्या भगदड़ मची है?"

माता गंगा जी बाबा बुड्ढा जी की बीड़ में पहुंचीं, चरणों में शीश झुकाया और सेवादारनियों को कह कर भोजन परोसा। बाबा बुड्ढा जी ने अनेक प्रकार के व्यंजनों को देखते हुए कहा, "माता जी! हम इस प्रकार के छत्तीस प्रकार के व्यंजन खाने के आदी नहीं हैं।" बाबा जी ने वह भोजन ग्रहण न कर संगत में बंटवा

*१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०३ (पंजाब)

दिया।

माता गंगा जी निराश हो अपने घर अमृतसर लौट आए। गुरदेव पति को सम्पूर्ण वार्ता कह सुनाई। गुरु जी सम्पूर्ण वार्ता सुनकर हंस पड़े। कहने लगे, "आशीर्वाद लेने के लिए महापुरुषों के पास विनम्र भावना से जाते हैं। शाही ठाठ-बाठ, वाह्‌य प्रदर्शन से ब्रह्मज्ञानी प्रभावित नहीं होते। आप गुरबाणी का पाठ करते हुए, स्वयं चने का आटा पीस कर मिस्सी रोटी तैयार करो, दहीं जमा कर अपने हाथों से मधानी से लस्सी तैयार करो, मक्खन निकालो। मिस्सी रोटी के साथ प्याज, आचार, मक्खन, लस्सी का भरा लोटा लेकर उनकी शरण में जाओ। तुम्हारे इस प्रकार प्रेम भरी श्रद्धा से बनाए सादा भोजन को छककर व तृप्त होकर वे तुम्हें जो आशीर्वाद देंगे वह अवश्य पूर्ण होगा।"

माता गंगा जी ने गुरु जी के आदेश के अनुसार प्रभु-नाम-सिमरन करते हुए मिस्सी रोटियां बनाईं। साथ में दहीं, छाछ, मक्खन, प्याज और आचार लेकर निर्मल श्रद्धा-भावना से पग-पग पर नाम-सिमरन करते हुए अपनी दो-चार सखियों के साथ बाबा बुड्‌ढा जी के पास पहुंचे। चरणों में शीश झुकाया। स्वयं अपने हाथों से खाना परोसा। बाबा जी मिस्सी रोटी, प्याज, मक्खन आदि देख कर प्रसन्न हो कहने लगे, "यह है हमारा मनपसंद भोजन।" मुट्‌ठी के मुक्के से प्याज तोड़ते हुए वचन किया, "वाहिगुरु तुम्हें ऐसे महाबली सपुत्र की मां होने का सौभाग्य प्रदान करेगा जो दुष्ट, अत्याचारी, अन्यायी, अहंकारी लोगों के सिरों को इस प्रकार तोड़ेगा जैसे मैंने यह प्याज तोड़ा है।"

यह सुनकर माता जी आत्म-विभोर हो गईं। धन्यवाद-स्वरूप उनका शीश बाबा बुड्‌ढा जी के चरणों में झुका। वे बाबा बुड्‌ढा जी से आशीर्वाद लेकर घर लौटीं और गुरु जी को सम्पूर्ण वृत्तांत सुनाया। गुरु जी ने प्रसन्न होकर कहा, "महान व्यक्ति सेवा-भावना से प्रसन्न होते हैं, वाह्‌य प्रदर्शन से नहीं। उनकी अन्तरात्मा से निकले आशीर्वाद से तुम्हारी मनोभावना अवश्य पूर्ण होगी।" आगामी वर्ष माता जी की कोख से श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म हुआ। उनके लालन-पालन में बाबा बुड्‌ढा जी का विशेष योगदान रहा। उनके पथ-प्रदर्शन में उन्होंने तलवार चलाने, तीरअंदाजी, घुड़सवारी, गतका खेलने की सैनिक शिक्षा ग्रहण की, जिसके फलस्वरूप उनके व्यक्तित्व में भक्ति और शक्ति, मीरी और पीरी, संत और सिपाही का अद्‌भुत संगम हो गया। सिक्ख फौज तैयार हुई। समय की आवश्यकता देखते हुए माला जपने वाले हाथ तलवार पकड़ने लगे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ग्यारह वर्ष के थे जब पिता श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी के बाद गुरगद्‌दी पर बैठे।

इस प्रकार समय के अनुरूप सिक्ख लहर इंकलाबी स्वरों के साथ गुंजायमान हुई और इसने जुल्म-जब्र का टाकरा करके हक-सच को पुनर्स्थापित किया।

आपका पत्र मिला

काबिले तारीफ पत्रिकाएं

गुरमति प्रकाश (पंजाबी) और गुरमति ज्ञान (हिंदी) पत्रिकाओं की जितनी भी तारीफ की जाये उतनी ही कम है। इतने कम पैसों में सिक्ख इतिहास की इतनी जानकारी और साथ में सुंदर रंगीन चित्र भी। वाहिगुरु आपको चढ़दी कला में रखे। इसी प्रकार आप समाज की सेवा करते रहें। सच्चे पातशाह से प्रार्थना है।

-हरजीत सिंघ, दुर्ग

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-३४

संस्कृत के विद्वान - कवि ब्रिज लाल

*-डॉ राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

दशमेश पिता के दरबारी कवियों में कुछ ऐसे विद्वान भी थे जो संस्कृत भाषा के प्रकांड पंडित थे। ऐसे विद्वान् कवियों में से एक थे-पंडित ब्रिज लाल।

'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' के कर्त्ता भाई संतोख सिंघ ने एवं 'प्राचीन सौ साखी' के रचयिता भाई साहिब सिंघ ने कवि श्री ब्रिज लाल को 'पंडित' ही माना है। 'प्राचीन सौ साखी' की नवासीवीं (८९वीं) साखी में दशमेश पिता का कथन इस प्रकार दर्ज है--"तूं भी प्रतीत वाला गुर के घर का पंडित हैं . . .।" यह कथन गुरु जी ने कवि ब्रिज लाल को संबोधित करते हुए उच्चारण किया है।

कवि ब्रिज लाल के जीवन से संबंधित एक घटना बहुत ही प्रसिद्ध है। एक बार एकत्र हुए सिक्खों ने गुरु जी से पूछा कि 'जपु जी' साहिब की महानता के विषय में बतायें तो दशमेश पिता ने फरमाया कि पहले पातशाह की बाणी 'जपु जी' साहिब का महातम अनंत है। यह 'अमृत फल' के समान है जिसका सेवन 'भूख त्रिखा' भी दूर करता है और अमरता भी प्रदान करता है। यह तृप्ति एवं मुक्ति देती है।

इतने में एकत्र हुए सिक्खों में बैठे कवि ब्रिज लाल ने कहा, "सच्चे पातशाह! मेरी एक बात सुनें। मैंने एक बार सपने में गुरु नानक साहिब जी के दर्शन किये और वहां मैंने 'जपु जी' साहिब का परम-अर्थ सुना, आज्ञा हो तो कहूं।"

गुरु जी ने वचन किया, "भाई सुनाओ।"

कवि ब्रिज लाल ने कहा, "मैंने सपने में प्रथम पातशाह से प्रार्थना की-

हर शत्रन मम ग्रिहे दिवा रात्रं हि दुख दान।
त्राहि मा द्रिशय गुरो स्वप्न सलोको कति रुकतवान।

अर्थात् गुरु जी! रात-दिन दुख देने वाले शत्रुओं को मेरे घर से हटाकर मेरी रक्षा करो और मुझे दर्शन दो . . .।

सतिगुरु नानक देव जी ने फरमाया:

मोक्षे च प्राणे गुण द्रव्य लाभे धर्मे विखते सुर सेवने वा।
योखित सुदासे सतिपुत्रयाने संग्रहि स्वभाव अरिष्टे प्रमोदे।
मनो निरोधे युद्धयस्त प्रग्रहे धर्मे च नीतौ दान गुणाकरे।
एषेषु कुर्यीति सत्यनाम वाणी मों कार मांधे कलि स्वदधान।

अर्थात् मुक्ति में प्राणों की रक्षा में, गुण-पदार्थ के लाभ में, वैराग्य में, देव-पूजन में, आज्ञाकारिणि श्रेष्ठ पत्नी में, श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त करने में, स्वभाव में, दुख में, आनंद में, मन रोकने में, युद्ध में अस्त्र-ग्रहण करने में, परिग्रह या त्याग में, धर्म-नीति-दान-गुण प्राप्ति में, सभी में सफलता के लिए इस कलियुग में 'सतिनामु बाणी' को धारण करो, जिसके आदि में 'ओंकार' है।

इस प्रकार कवि ब्रिज लाल ने अपनी सुंदर संस्कृत काव्य-रचना के द्वारा 'जपु जी' साहिब की महिमा का बखान किया।

कवि ब्रिज लाल की उपर्युक्त संस्कृत रचना भाई संतोख सिंघ जी ने 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में दी है। कवि ब्रिज लाल ने संस्कृत के साथ-साथ ब्रज-हिंदी आदि में भी रचना की होगी, परंतु वह उपलब्ध नहीं है।

कवि ब्रिज लाल की उपलब्ध संस्कृत कविता से स्पष्ट हो जाता है कि वे संस्कृत के अच्छे विद्वान तो थे ही, साथ ही उच्च कोटि के कवि भी थे।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब। मो: ०९४१७२-७६२७१*

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक : सिख धर्म दर्शन के मूल तत्व
लेखक : स. सत्येन्द्र पाल सिंघ
प्रकाशक : किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली

सजिल्द मूल्य : १९५ रुपये
पृष्ठ : १२८

सिक्ख धर्म तथा दर्शन ने अपनी मौलिक एवं विलक्षण रूहानी संवेदना, नैतिक जीवन-दृष्टि तथा ग्लोबल प्रकृति के कारण बीसवीं सदी में देश, मजहब तथा भाषा की सीमाओं को पार करते हुए विश्व भर के विचारकों का ध्यान आकर्षित किया है। स्वाभाविक २१वीं सदी के प्रथम दशक में यह और अधिक उत्साह के साथ दृष्टिगोचर हो रहा है। मूलत: भारत के उत्तर प्रदेश प्रांत से संबंध रखने वाले मूल सिक्खी धारा के सिक्ख लेखक डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ की यह पुस्तक हिंदी भाषा तथा देवनागरी अक्षरों में प्रकाशित एक अच्छा एवं सकारात्मक प्रयास है।

पुस्तक को दो खंडों में विभाजित किया गया है। 'खंड १' में 'सदा रहु हरि नाले', 'सच सभना का खसम', 'सिमरन सभ ते ऊचा', 'अब तन दियो है डार', 'कर मन मेरे सत ब्यौहार', 'तेरा भाना मीठा लागै', 'तेरी कुदरति कउ कुरबानु', शीर्षकों तले कुल सात निबंध हैं। 'खंड २' में 'जुगादि सच' शीर्षक तले मात्र एक ही निबंध है जो २३ से अधिक पृष्ठों पर फैला हुआ है।

सभी शीर्षक पावन गुरबाणी से लिए गए हैं। यही नहीं समस्त विचार-प्रवाह भी गुरबाणी की निर्मल व्याख्या करते हुए चलाने का प्रयास दर्शाते हैं। गुरबाणी के अथाह रूहानी सागर में से, काफी गहरे उतर कर चिंतन और मनन के द्वारा रूहानी ख्यालों तथा भावों के अनुपम मोती दर्शाये गए हैं जो पाठक को विस्माद प्रदान करने की क्षमता तो रखते हैं इसके साथ-साथ गुरबाणी के निर्मल विचार-भावों को जीवन-व्यवहार में लाकर व्यक्तिगत, आत्मिक कल्याण और समाज-कल्याण का लेखक का मनोभाव भी प्रशंसनीय है जैसे कि :

इस ज्ञान का क्या अर्थ यदि प्रभु से प्रीति और शेष सबके प्रति तरस्थता का भाव नहीं है? *(पृष्ठ १५)*

पूजा, तपस्या, संयम, दान, दक्षिणा, तीर्थ-यात्राओं आदि का कोई महत्त्व नहीं यदि मन में सच का निवास नहीं है। *(पृष्ठ २५)*

परमात्मा से मिलन की राह में परीक्षा पल-पल है। उस परीक्षा में खरा उतरना ही अवसर का सदुपयोग है। *(पृष्ठ ८५)*

विद्वता के गर्व को दरकिनार करते हुए नम्रता भाव में भीग कर लिखी गई यह पुस्तक आधुनिक चुंच ज्ञानियों के लिए एक मार्गदर्शन का कार्य करेगी।

शब्दजोड़ हिन्दी भाषा अनुसारी हैं। अच्छा होता यदि पावन गुरबाणी का स्टैंडर्ड रूप भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रमाणिक पोथियों से मिला लिया जाता। 'खंड १' में दिए गए निबंधों के शीर्षक गुरबाणी-पंक्तियों में से तो लिए गए हैं मगर गुरबाणी के अनुसार देखें तो इनमें कई त्रुटियां हैं।

-समीक्षक
सुरिंदर सिंघ निमाणा,
सहायक संपादक।

खबरनामा

जून १९८४ के साके दौरान शहीद हुए सिंघों को श्रद्धांजलि दी गई

अमृतसर : ६ जून। जब-जब सिक्खों पर जालिम सरकारों तथा गुरु-घर के विरोधियों ने हमले किए तब-तब सिक्ख और भी दृढ़ इरादे तथा हिम्मत लेकर उभरे। ऐसा ही एक समय था १९८४ के जून का प्रथम सप्ताह, जब सिक्ख कौम के साथ-साथ उनके केन्द्रीय धार्मिक स्थान श्री हरिमंदर साहिब तथा श्री अकाल तख्त साहिब का भी घोर अपमान किया गया। आज जून १९८४ में भारतीय फौज द्वारा किए गए हमले में शहीद हुए जांबाज सिंघों को श्रद्धांजलि देने के लिए श्री अकाल तख्त साहिब पर श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने उपस्थित संगत को सम्बोधित करते हुए कहा कि सिक्ख कौम अपने अस्तित्व में आने के समय से ही जुल्म तथा जालिमों के विरुद्ध संघर्षशील रही है। यह जान की बाजी लगाने वाले ऐसे शूरवीर सिक्खों की कौम है जिनका सारा इतिहास कुर्बानियों भरा है। उन्होंने कहा कि आज से २६ वर्ष पूर्व श्री हरिमंदर साहिब परिसर तथा अन्य ऐतिहासिक गुरुधामों पर, ३ जून, १९८४ को श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी पर्व मनाने के लिए एकत्र हुई संगत पर उस समय की भारत सरकार द्वारा सेना के माध्यम से सिक्ख कौम को दिए जख्म प्रत्येक सिक्ख की चेतनता का अंग बन गए हैं। उन्होंने कहा कि खालसा किसी वर्ण, देश, जाति, रंग तथा नस्ल की नफरत से मुक्त है। खालसे की जंग केवल जालिमों तथा लुटेरों के खिलाफ रही है और रहेगी। उन्होंने कहा कि जहां सिक्ख खुशी-गमी तथा शुक्राने की अरदास करते समय सरबत्त के भले की अरदास करना नहीं भूलते वहीं सिक्ख कलगीधर दशमेश पिता का यह फरमान भी नहीं भूलते: *"चू कार अज़ हमह हीलते दर गुजशत ॥ हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥"* कि जब सारे साधन विफल हो जाएं तो हाथ में तलवार उठा लेना वाजिब होता है।

उन्होंने कहा कि शहीदों की असल यादगार बनाना उनके दर्शाये मार्ग पर चलकर उनके निर्धारित किए निशाने की पूर्ति करनी होती है न कि शहादतों के नाम पर राजनीति करना।

इस अवसर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ, तख्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी तरलोचन सिंघ, तख्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी बलवंत सिंघ, श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जसविंदर सिंघ के अलावा शिरोमणि कमेटी के सचिव साहिबान, कर्मचारी तथा पंथ की अन्य महान शख्सियतों के अलावा शहीद सिंघों के पारिवारिक सदस्य भी उपस्थित थे। समरोह के अंत में जत्थेदार साहिब ने शहीद परिवारों के जो पारिवारिक सदस्य या रिश्तेदार उपस्थित थे, उन्हें सिरोपा देकर सम्मानित किया।

एक वर्ष तक चपड़चिड़ी में विलक्षण यादगार मुकम्मल हो जाएगी : स. बादल

चपड़चिड़ी/फतेहगढ़ साहिब। बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा सरहिंद फतह दिवस को मनाते हुए

पंजाब के मुख्यमंत्री स. प्रकाश सिंघ बादल ने कहा कि चपड़चिड़ी में जहां बाबा बंदा सिंघ बहादर की खालसा फौज तथा वजीर खान की शाही सेना के बीच युद्ध हुआ था, वहां पर एक विलक्षण यादगार एक साल तक तैयार करवा ली जाएगी।

स. बादल ने बाबा बंदा सिंघ बहादर की वीरता का गुणगान करते हुए कहा कि बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सिक्ख राज्य स्थापित करके सिक्ख जरनैलों को उच्च पदों से निवाजा तथा दबे-कुचले लोगों को बनता सम्मान एवं किसानों को भूमि के मालिकाना हक दिए। उन्होंने बताया कि चपड़चिड़ी में विलक्षण यादगार बनाने के लिए २० एकड़ जमीन खरीद ली गई है और नामवर आर्किटेक्टों से नक्शा तैयार करवाया गया है। इसमें फतह मीनार, अजायबघर तथा लाईट एण्ड साऊंड प्रोग्राम आदि जैसी अन्य कई चीजें स्थापित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार द्वारा कुप्प रुहीड़े तथ काहनूंवान नामक ऐतिहासिक स्थानों पर भी शहीदों की यादगार बनाने के लिए जगह की खरीद कर ली गई है और बहुत जल्द सुंदर यादगारें स्थापित हो जाएंगी। इस अवसर पर सरहिंद फतह दिवस को समर्पित स. बादल ने विशेष डाक कवर भी जारी किया।

स. ओंकार सिंघ तथा स. काबल सिंघ के परलोक गमन करने पर जत्थेदार अवतार सिंघ द्वारा शोक व्यक्त

अमृतसर। शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के सदस्य स. ओंकार सिंघ शरीफपुरा तथा स. काबल सिंघ गत दिनों परलोक गमन कर गए। जत्थेदार अवतार सिंघ ने दोनों सदस्यों के परलोक गमन कर जाने पर गहरे दुख का इजहार किया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने शोक संदेश में कहा कि स. ओंकार सिंघ शरीफपुरा (श्री अमृतसर) १९९६ से लेकर अब तक शिरोमणि कमेटी के सदस्य रहे तथा कुछ समय कार्यकारिणी सदस्य भी रहे। उन्होंने बताया कि स. ओंकार सिंघ का जीवन सदा पंथक कर्यों को समर्पित रहा।

स. काबल सिंघ के परलोक गमन कर जाने पर शोक व्यक्त करते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि स. काबल सिंघ शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कार्यकारी अध्यक्ष तथा अध्यक्ष रहे। मौजूदा समय वे शिरोमणि कमेटी के सदस्य थे। उन्होंने स. काबल सिंघ के बारे में आगे बताया कि वे शिरोमणि अकाली दल तथा शिरोमणि कमेटी के साथ लम्बे समय से जुड़े हुए थे तथा अपनी बहुमूल्य सेवाएं प्रदान कर पंथक कार्यों में बढ़-चढ़ हिस्सा लेते रहे। उनके चले जाने पर पंथ को एक दूरंदेशी तथा दृढ़ इरादों वाले नेता की कमी हमेशा महसूस होती रहेगी।

मुद्रक एवं प्रकाशक स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०७-२०१०